इग्नू
जन–जन का
विश्वविद्यालय

B.P.S.C. 133

तुलनात्मक शासन और राजनीति

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

मैदान गढ़ी, नई दिल्ली — 110068

विशेषज्ञ समिति

प्रो. डी. गोपाल (अध्यक्ष)
राजनीति विज्ञान संकाय, प्रमुख,
गाँधी और शांति अध्ययन केंद्र,
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली

प्रो. पी. साहदेवन
दक्षिण एशिया अध्ययन केंद्र,
एस.आई.एस., जे.एन.यू.,
नई दिल्ली

प्रो. अब्दुल नाफे (अवकाश)
अमेरिकन, लैटिन अमेरिका और
कैनेडियन अध्ययन केंद्र, एस.आई.एस.,
जे.एन.यू., नई दिल्ली

प्रो. ए.वी. वीजापुर
राजनीति विज्ञान विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय,
अलीगढ़

प्रो. आर एस. यादव (अवकाश)
राजनीति विज्ञान विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र,
हरियाणा

प्रो. अनुराग जोशी
राजनीति विज्ञान संकाय,
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू,
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली

प्रो. एस. वी. रेड्डी (*पाठ्यक्रम संयोजक*)
राजनीति विज्ञान संकाय,
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू,
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली

पाठयक्रम के लिए गठित समिति

खण्ड 1	**परिचय**	
इकाई 1	तुलनात्मक विश्लेषण प्रकृति, क्षेत्र और उपयोगिता #	प्रो. उज्जवल कुमार, राजनीति विज्ञान संकाए, दिल्ली विश्वविद्यालय
इकाई 2	तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण की विधियाँ #	प्रो. अनुपमा रॉय, राजनीति अध्ययन केन्द्र, जे. एन. यू. दिल्ली
खण्ड 2	**शासनों की तुलना**	
इकाई 3	सत्तावादी और लोकतांत्रिक शासन #	प्रो. आशुतोष कुमार, पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ — 160014
इकाई 4	नागरिक और सैन्य शासन	डॉ. पी. रमना, स्वतंत्र नीति विश्लेषक, भूतपूर्व शोध अध्येता रक्षा अध्ययन और विश्लेषण संस्थान (IDSA), नई दिल्ली
खण्ड 3	**सरकार के रूप**	
इकाई 5	संसदीय और अध्यक्षीय व्यवस्था	श्री अब्दुल मजीद डार, शोधकर्ता, राजनीति विज्ञान संकाय सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली
इकाई 6	संघीय और एकात्मक व्यवस्था	सुश्री सुरभि राव, शोधकर्ता, राजनीति विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली
खण्ड 4	**राजनीतिक भागीधारी और प्रतिनिधित्व के स्वरुप**	
इकाई 7	राजनीतिक दल और दल व्यवस्था	डॉ. प्रियवंदा मिश्रा, सहायक प्रोफेसर, सिंबाओसिस लॉ स्कूल, नोयड़ा, उ.प्र.
इकाई 8	दबाव समूह	डॉ. एन. किशोरचंद सिंह, परामर्शदाता, राजनीति विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली
इकाई 9	चुनावी प्रक्रियाएँ	श्री अब्दुल मजीद डार शोधकर्ता, राजनीति विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली
खण्ड 5	**तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में राज्य**	
इकाई 10	विकसित और विकासशील देषों में राज्य	डॉ. किशोरचंद सिंह, परामर्शदाता, राजनीति विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली
इकाई 11	राज्य - नागरिक समाज संबंध	डॉ. बोरन डे, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय
इकाई 12	वैश्वीकरण के युग में राज्य	प्रो. सुधा पाई (भूतपूर्व), राजनीति अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
इकाई 13	राज्य की प्रकृति पर तुलनात्मक बहस	श्री अब्दुल मजीद डार, शोधकर्ता, राजनीति विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

यह इकाइयाँ EPS -09: तुलनात्मक सरकार और राजनीति, से ली गई है।

पाठ्यक्रम संपादक — प्रो. एस. वी. रेड्डी

इकाई पुनरीक्षण — डॉ. राज कुमार शर्मा

अनुवादक मंडल — डॉ. योगम दत्ता, (इकाई 1,2,7 से 11),
डॉ. प्रदीप टंडन, (इकाई 4,6,12,13),
डॉ. आकांशा बंसल, (इकाई 5)

सामग्री निर्माण

श्री राजीव गिरधर
सहायक कुलसचिव (प्रकाशन)
एम.पी.डी.डी. (इग्नू), नई दिल्ली

श्री हेमन्त कुमार
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)
एम.पी.डी.डी. (इग्नू), नई दिल्ली

सचिवीय सहायता / पृष्ठ सज्जा

श्रीमति साधना शर्मा

अक्टूबर, 2020

© इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2020

ISBN : 978-81-948104-2-1

सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश किसी भी रूप में पुनः प्रकाशित नहीं किया जा सकता, अनुलिपिक या किसी अन्य साधन द्वारा।
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के बिना किसी लिखित आदेश व पुनः इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम की सूचना विश्वविद्यालय के नेदान गढ़ी कार्यालय, नई दिल्ली - 110068 के द्वारा प्राप्त की जा सकती है अथवा विश्वविद्यालय की वेबसाइट *http://www.ignou.ac.in* देखें।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली की ओर से कुलसचिव, सामग्री निर्माण एवं वितरण प्रभाव द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।
लेजर टाइप सेटिंग : श्रीमति साधना शर्मा
मुद्रक : मैसर्स ए–वन ऑफसेट प्रिंटर्स, 5/34, कीर्ति नगर, इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110015 द्वारा मुद्रित।

विषय सूची

शीर्षक		पृष्ठ सं
खण्ड 1	**परिचय**	**7**
इकाई 1	तुलनात्मक विश्लेषण प्रकृति, क्षेत्र और उपयोगिता	9
इकाई 2	तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण की विधियाँ	28
खण्ड 2	**शासनों की तुलना**	**43**
इकाई 3	सत्तावादी और लोकतांत्रिक शासन	45
इकाई 4	नागरिक और सैन्य शासन	58
खण्ड 3	**सरकार के रूप**	**71**
इकाई 5	संसदीय और अध्यक्षीय व्यवस्था	73
इकाई 6	संघीय और एकात्मक व्यवस्था	87
खण्ड 4	**राजनीतिक भागीदारी और प्रतिनिधित्व के स्वरुप**	**99**
इकाई 7	राजनीतिक दल और दल व्यवस्था	101
इकाई 8	दबाव समूह	116
इकाई 9	चुनावी प्रक्रियाएँ	133
खण्ड 5	**तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में राज्य**	**151**
इकाई 10	विकसित और विकासशील देशो में राज्य	153
इकाई 11	राज्य – नागरिक समाज संबंध	168
इकाई 12	वैश्वीकरण के युग में राज्य	183
इकाई 13	राज्य की प्रकृति पर तुलनात्मक बहस	198
अन्य अध्यन सामग्री		215

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

पाठ्यक्रम परिचय

राजनीतिक विज्ञान के उप-क्षेत्रों में से एक है तुलनात्मक सरकार और राजनीति। समय के साथ तुलनात्मक राजनीति का स्वरूप और दायरा बदला है। एक राजनीतिक वैज्ञानिक ने कहा है कि तुलनात्मक राजनीति तुलनात्मक पद्धति को ध्यान में रखकर अध्ययन करती है (महलर 2000, पृष्ठ 3)। तुलनात्मक अध्ययन देशों, राज्यों, समाजों और राजनीतिक प्रणालियों के भीतर होने वाली सभी राजनीतिक धाराओं का अध्ययन करता है। देशों और राज्यों के बीच राजनीतिक परिघटना का अध्ययन राजनीतिक विज्ञान एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंध का एक अन्य उप-क्षेत्र हैं। तुलनात्मक राजनीति और अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के बीच का अंतर दो प्रसिद्ध पुस्तकों के शीर्षक से साफ झलकता है – जोसेफ ला पालोम्बरा की पालिटिक्स विद इन नेशंस और हेंस मोर्गेथू की पालिटिक्स अंमग नेशंस। हालांकि इस पाठ्यक्रम में जैसा कि आप जानेंगे तुलनात्मक राजनीति और अंतर्राष्ट्रीय संबंध के बीच एक स्पष्ट अंतर निकालना हमेशा आसान नहीं होता हैं। तुलनात्मक अध्ययन के विशेषज्ञों का मानना है कि तुलना मानक विचार के लिए मौलिक है और किसी भी चीज की व्याख्या उसकी तुलना किए बिना मुश्किल है। तुलना के सिद्धांतों से बचना मुश्किल है – अन्य समाज राजनीतिक कर्ताओं, संरचनाओं, संस्थानों या विचारों के साथ तुलना। इस पाठ्यक्रम की परिचायात्मक इकाईयाँ राजनीति और सरकार के तुलनात्मक अध्ययन में आने वाली अस्पष्टताओं, नुकसान और चुनौतियों को सामने लाती हैं। परंतु इन सब की वजह से हमें तुलना करने से रुकना नहीं चाहिए। आखिरकार स्वयं का ज्ञान हम दूसरों के ज्ञान के माध्यम से भी प्राप्त कर सकते हैं। तुलनात्मक सरकार और राजनीति पर परिचायात्मक पाठ्यक्रम होने के नातें, यह पाठ्यक्रम सरकार और राजनीति के अध्ययन में कुछ प्रमुख मुद्दों, कार्यप्रणाली और तुलनात्मक विश्लेषण के क्षेत्रों पर प्रकाश डालेगा। यह तुलनात्मक राजनीति में दृष्टिकोण और तरीकों के साथ शुरू होगा और फिर यह जाँचने के लिए आगे बढेगा की कैसे राजनीतिक शासकों, सरकारों, संस्थानों (राजनीतिक दलों, दबाव समूहों और चुनावी प्रणालियों) और राज्यों की उत्पत्ति और कार्यप्रणाली को वर्गीकृत, वर्णित तथा समझाया जाता है। इस पाठ्यक्रम को पढने के बाद, आप तुलनात्मक राजनीति की प्रमुख अवधारणाओं और सिद्धांतों को समझ पाऐगें। साथ ही, तुलनात्मक राजनीति की मुख्य अवधारणाओं, सिद्धांतों तथा प्रणालियों द्वारा सरकारों , राजनीतिक संस्थानों तथा राज्यों का अध्ययन कर पाऐंगे। इन सबसे आपकी विश्लेषणात्मक प्रस्तुति और लेखन कौशल में सुधार होगा।

इस पाठ्यक्रम की सभी इकाईयों की संरचना एक समान है। प्रत्येक इकाई उद्देश्य से शुरू होती है, जो यह जानने में मदद करती है की आपकों इस इकाई में क्या जानने का मौका मिलेगा। इन उद्देश्यों को ध्यान से पढ़े और कुछ खंड पढ़नें के बाद उनका आकलन करते रहे। समझ की आसानी के लिए इकाई को वर्गो और उप-वर्गों में बाटा गया है। आपकी प्रगति की जांच के लिए कुछ अभ्यास प्रश्न भी दिए गए हैं। जब आप वहाँ तक पहुँचें तो इन प्रश्नों के उत्तर

देने का प्रयास करें। इससे आपकों अपने अध्ययन का आकलन करने और विषय की समझ का परीक्षण करने में मदद मिलेगी। इकाई के अंत में दिए गए उत्तर या दिशा निर्देश के साथ आप अपने उत्तरों की तुलना करें। कुछ प्रमुख शब्दों, अपरिचित शब्दों और विचारों को बाक्स आइटम के रूप में या प्रत्येक इकाई के अंत में प्रदान किया गया है।

हालाँकि इस पाठ्यक्रम की इकाईयों को सावधानी पूर्वक बनाया गया है और विशेषज्ञों द्वारा लिखा गया हैं, लेकिन साथ ही घ्यान रखें कि ये इकाईयाँ अपने आप में संपूर्ण और व्यापक नहीं है। इस विषय की गहन समझ के लिए, इस पाठ्यक्रम के अंत में दी गई रीडिंग लिस्ट में सुझाई गई किताबों, लेखों तथा अध्यायों को पढ़े।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

खंड 1

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

खंड एक

परिचय

तुलना संभवतः किसी भी परिघटना के बारे में वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त करने के सबसे प्राचीन और सर्वाधिक विस्तृत रुप से प्रयोग की जाने वाली पद्धतियों में से एक है। यह पद्धति अरस्तु के समय से प्रयोग में लाई गई है, जिसने अपने समय की विभिन्न शासन प्रणालियों और सरकारों की तुलना के माध्यम से राजनीतिक प्रणाली की विशेषताओं/लक्षणों का विस्तारपूर्वक वर्णन करने का पहला अभिलेखित प्रयास किया। तत्पश्चात्, अनेक विचारकों और दार्शनिकों ने विभिन्न युगों में, जैसे रोमन दार्शनिक सिसेरो, पॉलिबियसय, पुनर्जागरण और ज्ञानोदय चिंतक जैसे मैक्यावली, हॉब्स , लॉक आदि और उन्नीसवीं सदी में अलेक्स डी-टॉकविल, कार्ल मार्क्स, जॉन स्टूअर्ट मिल, वॉल्टर बेजहॉट आदि जैसे कई अन्यों ने राजनीतिक गतिविधियों के बारे में व्यापक और समग्र ज्ञान प्राप्त करने के सुलभ और महत्वपूर्ण साधन के रुप में तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग किया है। तुलना को राजनीतिक अन्वेषण की एक पद्धति के रुप में उन्नीसवीं सदी में व्यापक स्वीकृति मिलने के साथ, राजनीति शास्त्र के अध्ययन विषय के अन्तर्गत, अध्ययन के एक प्रधान उप-क्षेत्र के रुप में तुलनात्मक राजनीति का उदय हुआ। बौद्धिक प्रयास के अन्य क्षेत्रों की भाँति, तुलनात्मक राजनीति का अध्ययन करने वालों के बीच, इसकी विषय -वस्तु के संबंध में आम सहमति नहीं है। तुलनावादियों ने, विशेष रुप से, खुद को दो ध्रुवों के बीच खिंचता हुआ पाया है: क्षेत्र-विशेषज्ञ का ध्रुव और सामाजिक वैज्ञानिक का ध्रुव। इस खंड की दो इकाइयाँ विषय-वस्तु के साथ-साथ, राजनीतिक विश्लेषण के साधन के रुप में तुलनात्मक शासन के सैद्धांतिक और पद्धति-संबंधी आधारों को स्पष्ट करने का प्रयास करती हैं। **इकाई 1** तुलनात्मक विश्लेषण : प्रकृति, क्षेत्र और उपयोगिता के प्रति समर्पित है। यह तुलनात्मक शासन से जुडी मूल अवधारणाओं, निर्माणों और अन्य विशेषताओं से आपका परिचय कराएगी। दूसरी इकाई, **इकाई 2** परिचालन संबंधी पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करती है, जैसे तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन में प्रयोग की जाने वाली पद्धतियाँ, उपकरण और पद्धति-संबंधी तकनीक।

इकाई 1 तुलनात्मक विश्लेषण: प्रकृति, क्षेत्र और उपयोगिता *

संरचना

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 राजनीति का तुलनात्मक अध्ययनः प्रकृति और विषय-क्षेत्र

- 1.2.1 तुलनाएँ: संबंधों की पहचान
- 1.2.2 तुलनात्मक राजनीति और तुलनात्मक सरकार

1.3 तुलनात्मक राजनीति: एक ऐतिहासिक सिंहावलोकन

- 1.3.1 राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन की उत्पत्ति
- 1.3.2 उन्नीसवीं सदी का अन्त और बीसवीं सदी का प्रारंभ
- 1.3.3 द्वितीय विश्व युद्ध और उसके पश्चात्
- 1.3.4 1970 का दशक और विकासवाद की चुनौतियाँ
- 1.3.5 1980 का दशक: राज्य की वापसी
- 1.3.6 बीसवीं सदी का अंत: वैश्वीकरण और उभरती प्रवृत्तियाँ/संभावनाएँ

1.4 राजनीति का तुलनात्मक अध्ययन: उपयोगिता

- 1.4.1 सैद्धांतिक सूत्रीकरण के लिए तुलना
- 1.4.2 वैज्ञानिक कठोरता के लिए तुलनाएँ
- 1.4.3 तुलनाएँ जो संबंधों में व्याख्याओं की ओर ले जाएँ

1.5 सारांश

1.6 मुख्य शब्द

1.7 संदर्भ

1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

हम अक्सर जाने-अनजाने, अपनी तुलना दूसरों से करते हैं य दूसरे क्या सोचते हैं, वे क्या करते हैं या कैसे जीते हैं इत्यादि। दूसरों के साथ-तुलना और अपने चारों ओर की वस्तुओं की तुलना करना हमें दूसरों के व्यवहार के संदर्भ में अपने खुद के व्यवहार को और गहराई से समझने में सक्षम बनाता है। इस प्रकार की तुलना की प्रक्रिया काफी हद तक हमारी निजता को रुप देती है। इस प्रकार की तुलना की प्रक्रिया सामूहिक स्तर पर भी घटित होती है। राजनीति विज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत, राष्ट्रों

* प्रो. उज्जवल कुमार, राजनीति विज्ञान संकाए, दिल्ली विश्वविद्यालय। यह इकाई EPS -09: तुलनात्मक सरकार और राजनीति, से ली गई है।

के आर-पार विभिन्न राजनीतिक प्रणालियों, संस्थाओं, प्रक्रियाओं, गतिविधियों आदि की तुलना के क्रियाकलाप में हम हिस्सा लेते है।

इस प्रारंभिक इकाई को इस उद्देश्य से बनाया गया है कि हम राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन के बारे में सैद्धांतिक और विधि-तांत्रिक दृष्टि से जानकारी प्राप्त कर सकें। इस इकाई में हम राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन के प्रधान पहलुओं-प्रकृति, विषय क्षेत्र और उपयोगिता-पर ध्यान केंद्रित करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे :

- राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन के अर्थ और विषय क्षेत्र की व्याख्या;
- राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन की प्रमुख अवधारणाओं की परिभाषा और वर्णन;
- राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन के उद्देश्य की व्याख्या;
- राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन के महत्व/लाभ और प्रासंगिकता की व्याख्या;
- राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि/विकास का वर्णन;
- राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन में प्रयोग की जाने वाली मुख्य अवधारणाओं की पहचान और व्याख्या।

1.1 प्रस्तावना

राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन का संबंध राजनीतिक परिघटनाओं की तुलना से है। तुलनात्मक राजनीति का मूल उद्देश्य विश्व के देशों के बीच मुख्य राजनीतिक समानताओं और भिन्नताओं को सम्मिलित करना है। बल इस बात पर दिया जा रहा है किस प्रकार विभिन्न समाज दूसरों के साथ तुलना के माध्यम से विविध समस्याओं का सामना करते हैं। यद्यपि 'तुलनात्मक पद्धतियाँ' और 'तुलनाओं की विधियाँ' अन्य विषयों में भी व्यापक रुप से प्रयोग की जाती हैं, उदाहरण के लिए, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र इत्यादि, परन्तु तुलनात्मक राजनीति का यह मुख्य तत्व है - अर्थात् उसकी विषय-वस्तु, शब्दावली, परिप्रेक्ष्य, और अवधारणाएँ - जो तुलनात्मक राजनीति को दोनों प्रकार से उसकी विशिष्टता प्रदान करता है, एक 'पद्धति' के रुप में भी और 'तुलनात्मक राजनीति' के अध्ययन के एक रुप उप-क्षेत्र के रुप में भी।

तुलनात्मक राजनीति की प्रकृति और विषय-क्षेत्र का ऐतिहासिक दृष्टि से निर्धारण (क) विषय-वस्तु (ख) शब्दावली और (ग) राजनीति परिप्रेक्ष्य में परिवर्तनों द्वारा हुआ है। ये समझने के लिए कि ये परिवर्तन कहाँ, क्यों और कैसे हुए, हमें ये देखना होगा कि एक निश्चित ऐतिहासिक काल में, अध्ययन का केन्द्र क्या है, अध्ययन के लिए किन उपकरणों, भाषाओं या अवधारणाओं का प्रयोग हो रहा है और अन्वेषण का प्रेक्षण स्थल, परिप्रेक्ष्य और उद्देश्य क्या है। अतः आगामी खंडों में, हम तुलनात्मक राजनीति के विकास के तरीके, इस विकास को अनुप्राणित करने वाली निरंतरताओं और विछिन्नताओं, जिन तरीकों से विशिष्ट ऐतिहासिक संदर्भों में और सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक बलों द्वारा इस विकास का निर्धारण हुआ है, और किस प्रकार बीसवीं सदी के अन्त के प्रसगं में, अर्थात् वैश्वीकरण के प्रसंग में, तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र के बारे में अब तक किए गए विचारों के तरीके में आमूल परिवर्तन लाए गए हैं, इन सब पर विचार करेंगे।

1.2 राजनीति का तुलनात्मक अध्ययनः प्रकृति और विषय –क्षेत्र

जैसा कि हमने देखा, तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग सामान्य रुप से अन्य विषयों में भी किया जाता है और तुलनात्मक राजनीति की विशिष्ट विषय-वस्तु, भाषा और परिप्रेक्ष्य वो तत्व हैं जो उसे उन अन्य विषयों से स्पष्टतया अलग करते हैं जो तुलनात्मक पद्धतियों का प्रयोग करते है। ऐसी स्थिति में, ये प्रश्न पूछा जा सकता है कि क्या तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण का एक विशिष्ट क्षेत्र है या वह राजनीति विज्ञान के विस्तृत अध्ययन विषय में शामिल किया गया एक उप-अध्ययन विषय है। हमें यह याद रखना होगा कि विषय-वस्तु के तीन पहलू, भाषा, शब्दावली और परिप्रेक्ष्य राजनीति विज्ञान के व्यापक अध्ययन विषय के अन्तर्गत तुलनात्मक राजनीति की विशिष्टता को स्थापित करने के लिए अपर्याप्त हैं, मुख्यतः इसलिए क्योंकि तुलनात्मक राजनीति, राजनीति शास्त्र के विषय -वस्तु और चिंताओं में भागीदार है, जैसे, लोकतंत्र, संविधान, राजनीतिक दल, सामाजिक आन्दोलन इत्यादि। इस प्रकार, राजनीति विज्ञान के अध्ययन विषय के अन्तर्गत, तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण की विशिष्टता निर्दिष्ट होती है उसके द्वारा सचेत रुप से तुलनात्मक पद्धति के प्रयोग द्वारा उन प्रश्नों का उत्तरदेने में जिनमें राजनीति वैज्ञानिकों की सामान्य दिलचस्पी हो सकती है।

1.2.1 तुलनाएँ: संबंधों की पहचान

तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण के चरित्र और विषय क्षेत्र को परिभाषित करने में तुलनात्मक पद्धति पर कुछ विद्वानों द्वारा यह बल दिया जाना, इस दृष्टि से कायम रखा गया है ताकि 'बाहरी देशों' या 'विदेशों' के अध्ययन के रुप में तुलनात्मक राजनीति से संबंधित लगातार गलतफहमियों को दूर किया जा सके। इस प्रकार की व्याख्या के अन्दर, यदि आप अपने से अलग किसी अन्य देश का अध्ययन कर रहे हों (उदाहरण के लिए, एक अमेरिकन ब्राज़ील की राजनीति का अध्ययन कर रहा हो अथवा एक भारतीय श्रीलंका की राजनीति का अध्ययन कर रहा हो) तो आपको एक तुलनावादी कहा जाएगा। आमतौर पर, इस गलतफहमी का अर्थ केवल व्यक्तिगत राष्ट्रों के बारे में सूचना एकत्रित करना होता है जिसमें तुलना थोड़ी ही मात्रा में या अधिक से अधिक अंतर्निहित होती है। अधिकांश तुलनावादी ये तर्क देंगे कि तुलनात्मक राजनीति की विशिष्टता उसके द्वारा दो या अधिक राष्ट्रों के अध्ययन के लिए तुलनाओं के एक सचेत और व्यवस्थित प्रयोग में है, जिसका उद्देश्य विश्लेषण की जा रही निश्चित परिघटनाओं के संबंध में उनके बीच भिन्नताओं या समानताओं की पहचान करना और अंततः उनकी व्याख्या करना है। एक लम्बे समय तक तुलनात्मक राजनीति मात्र समानताओं और भिन्नताओं को खोजती नज़र आई, और इसे उसने राजनीतिक परिघटनाओं का वर्गीकरण करने, विभाजित करने और ध्रुवित करने की ओर संचालित किया। परन्तु तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण केवल समानताओं और भिन्नताओं की पहचान करना नहीं है। अनेक विद्वानों का मानना है कि तुलनाओं के प्रयोग का उद्देश्य समानताओं और भिन्नताओं अथवा तुलना और विषमता उपागम के पार जाते हुए, अन्त में संबंधों के एक विस्तृत ढाँचे में राजनीतिक परिघटनाओं का अध्ययन करना है। ऐसा माना जाता है कि यह हमारी समझ को और गहन करने में मदद करेगा और राजनीतिक परिघटनाओं का उत्तर देने और व्याख्या करने के स्तरों का विस्तार करेगा (मोहन्ती, 1975)।

1.2.2 तुलनात्मक राजनीति और तुलनात्मक सरकार

रॉनल्ड चिलकॉट का दावा है कि संकल्पनात्मक उलझन के कारण, इस धारणा का अक्सर, सामना करना पड़ता है कि तुलनात्मक राजनीति का संबंध सरकारों के अध्ययन से है। तुलनात्मक सरकार से भिन्न, जिसका क्षेत्र सरकारों के तुलनात्मक अध्ययन तक सीमित है, तुलनात्मक राजनीति का संबध सभी प्रकार की राजनीतिक गतिविधि के अध्ययन से है, सरकारी और गैर-सरकारी भी। तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र की एक 'सर्व-सम्मिलित' प्रकृति है और तुलनात्मक राजनीति के विशेषज्ञ, वह सब कुछ जो राजनीतिक है, उसके अध्ययन के रुप में इसे देखते हैं। तुलनात्मक राजनीति की इससे लघु संकल्पना, इस क्षेत्र के अन्तर्गत अध्ययन से संबंधित चयन और अपवर्जन के मानदंडों को धुंधला कर देगी। (चिलकॉट, 1994:4)

ये फिर भी कहा जा सकता है कि एक लंबे समय तक तुलनात्मक राजनीति ने अपने आपको सरकारों और शासन प्रणालियों के प्रकार से संबंधित रखा और पश्चिमी देशों के अध्ययन तक सीमित रखा। विउपनिवेशीकरण की प्रक्रिया ने, विशेष रुप से द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामस्वरुप, 'नए राष्ट्रों' के अध्ययन में रूचि उत्पन्न की। तुलना के संम्पूर्ण विस्तार के अन्दर जिन इकाइयों/केस को लाया जा सकता था, उनकी संख्या और विविधता में वृद्धि के साथ-साथ सभी इकाइयों में राजनीतिक परिघटनाओं और प्रक्रियाओं की व्याख्या करने वाले भावात्मक सर्वदेशीय प्रतिमानों को सूत्रबद्ध करने का आग्रह भी जुडा। लगभग इसी समय, अध्ययन के मामलों में वृद्धि और विविधता के साथ, राजनीति के क्षेत्र में भी एक विस्तार हुआ, जिसने एक सम्पूर्ण प्रणाली के रुप में राजनीति के परीक्षण का प्रबन्ध किया जिसमें न केवल राज्य और उसकी संस्थाएँ, बल्कि व्यक्ति, सामाजिक समूहीकरण, राजनीतिक दल, हित समूह, सामाजिक आन्दोलन इत्यादि भी शामिल किए गए। राजनीतिक प्रक्रियाओं की व्याख्या के कुछ पहलुओं पर विशेष ध्यान दिया गया, उदाहरण के लिए, राजनीतिक सामाजीकरण, राजनीतिक संस्कृति के प्रतिरुप, हित अभिव्यक्ति की क्रियाविधियाँ और हित सामूहीकरण, राजनीतिक भर्ती की शैलियाँ, राजनीतिक प्रभावोत्पादकता और राजनीतिक उदासीनता की सीमा, सत्तारूढ़ अभिजातवर्ग इत्यादि। इन व्यवस्थित अध्ययनों का निर्माण राष्ट्र-निर्माण की चिन्ता के इर्द-गिर्द किया जाता था, अर्थात् एक जनता के लिए राजनीतिक-सांस्कृतिक पहचान की उपलब्धि करना, राज्य-निर्माण, अर्थात् राजनीति के लिए संस्थात्मक ढाँचे और प्रक्रियाओं की उपलब्धि करना और आधुनिकीकरण अर्थात् विकास के पाश्चात्य मार्ग की दिशा में परिवर्तन की एक प्रक्रिया को प्रवर्तित करना। विश्व राजनीति में विचारधाराओं के भिन्न ध्रुवों, नव-स्वतंत्रता प्राप्त राष्ट्रों द्वारा पश्चिमी साम्राज्यवाद की अस्वीकृति, इन राष्ट्रों की अपनी विशिष्ट पहचान को कायम रखने की चिन्ता (जो गुट-निरपेक्ष आन्दोलन के उदय में सुस्पष्ट रुप से प्रतिबिंबित है) और विकास के समाजवादी मार्ग के प्रति अधिकांश राष्ट्रों में सहानुभूति ने धीरे-धीरे वैश्विक/व्यापक स्तरीय तुलनाओं के उद्देश्यों के लिए अधिकांश आधुनिकीकरण प्रतिमानों को अप्रासंगिक बना दिया। जहाँ एक ओर पचास (1950) और साठ (1960) का दशक वो काल था जहाँ बड़े पैमाने के प्रतिमानों के निर्माण द्वारा राजनीतिक यथार्थ की व्याख्या करने का प्रयास किया गया, वहीं, सत्तर (1970) के दशक ने तृत्तीय विश्ववाद के दावे और इन प्रतिमानों के पीछे हटने को देखा। फिर अस्सी (1980) के दशक में हमने

संकीर्ण और छोटी इकाइयों में तुलना के स्तर में संकुचन को देखा। परन्तु, वैश्वीकरण के साथ, व्यापक स्तरीय तुलनाओं की अनिवार्यताओं में वृद्धि हुई और गैर-राजकीय गैर-सरकारी पात्रों के फैलाव और आर्थिक संयोजन और सूचना टेक्नॉलजी क्राँति के साथ राष्ट्रों के बीच अंतःसंबंधों में वृद्धि के साथ तुलनाओं का क्षेत्र विविधतापूर्ण हो गया है।

अभ्यास प्रश्न 1

नोट: i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) इकाई के अन्त में अपने उत्तर के लिए संकेतों को देखें।

1. तुलनात्मक सरकार किस प्रकार तुलनात्मक राजनीति से भिन्न है?

.....

.....

.....

1.3 तुलनात्मक राजनीति: एक ऐतिहासिक सिंहावलोकन

ऐतिहासिक दृष्टि से इसकी विषय-वस्तु में परिवर्तनों के साथ तुलनात्मक राजनीति की प्रकृति और विषय क्षेत्र में बदलाव आया है। तुलनात्मक राजनीति की विषय वस्तु का निर्धारण भौगोलिक स्थान (अर्थात् राष्ट्र, क्षेत्र) जिसने क्षेत्र को संस्थापित किया है और साथ-साथ सामाजिक यथार्थ और परिवर्तन से संबंधित प्रधान विचारों, जिन्होंने तुलनात्मक अध्ययन के उपागमों (पूँजीवादी, समाजवादी, मिश्रित और देशज) को आकार दिया है, इन दोनों के द्वारा किया गया है। उसी प्रकार, भिन्न-भिन्न ऐतिहासिक परिस्थितियों में, अध्ययन का दबाव या प्राथमिक चिन्ता बदलती रही है।

1.3.1 राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन की उत्पत्ति

तुलनात्मक राजनीति की एक लम्बी बौद्धिक वंशावली है, जो कि अरस्तू तक पीछे जाते हुए और निक्कोलो मेक्यावली, जॉन लॉक , मैक्स वेबर इत्यादि जैसे चिंतकों द्वारा जारी रखी गई। अपने सबसे प्रारंभिक अवतार में, राजनीति का तुलनात्मक अध्ययन हमारे पास यूनानी दार्शनिक अरस्तू के द्वारा किए गए अध्ययनों के रुप में आता है। अरस्तू ने 150 राज्यों के संविधानों का अध्ययन किया और उनका शासन प्रणालियों के प्रारुप में वर्गीकरण किया। उसका वर्गीकरण वर्णनात्मक और मानकीय, दोनों श्रेणियों में प्रस्तुत किया गया, अर्थात् उसने न केवल शासन प्रणालियों और राजनीतिक प्रणालियों का वर्णन और वर्गीकरण उनके प्रकार के अनुसार किया, उदाहरण के लिए, लोकतंत्र, कुलीनतंत्र, राजतंत्र इत्यादि बल्कि सुशासन के कुछ निश्चित मानकों के आधार पर उन्हें श्रेणीबद्ध भी किया। इस तुलना के आधर पर, उसने शासन प्रणालियों को अच्छे और बुरे-आदर्श और विकृत में विभाजित किया। इन अरस्तूवादी श्रेणियों को पॉलिबियसय (201-120 ई.पूर्व) और सिसेरो (106-43 ई.पूर्व) जैसे प्राचीन रोमन चिंतकों इनपर औपचारिक और कानूनी आधारों पर विचार करते हुए इन्हें

स्वीकृति दी और आगे बढ़ाया। शासन प्रणालियों के तुलनात्मक अध्ययन में दिलचस्पी 15 वीं सदी में मेक्यावली (1469-1527) के साथ पुनः प्रकट हुई जिसने विभिन्न प्रकार की जागीरों (वंशानुगत, नई, मिश्रित और गिरजे-संबंधी) और गणराज्यों की तुलना की ताकि उन्हें शासित करने के सबसे सफल तरीकों तक पहुँचा जा सके।

1.3.2 उन्नीसवीं सदी का अन्त और बीसवीं सदी का प्रारंभ

उन्नीसवीं सदी के अन्त और बीसवीं सदी के प्रारंभ के तुलनात्मक अध्ययनों में 'उत्तम व्यवस्था' या 'आदर्श राज्य' से संबंधित दार्शनिक और काल्पनिक प्रश्नों के साथ ध्यानमग्नता और इस प्रक्रिया में भावात्मक और मानकीय शब्दावली का प्रयोग कायम रहा। ये वो समय था जब उदारवाद सबसे प्रबल विचारधारा थी और यूरोपीय राष्ट्र विश्व राजनीति पर अपरिहार्य प्रभुत्व का आनन्द ले रहे थे। एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका की शेष दुनिया या तो यूरोपीय उपनिवेश थी या भूतपूर्व उपनिवेशों के रुप में उनके प्रभाव क्षेत्र में थी। इस काल के दौरान अपनाए गए तुलनात्मक अध्ययनों, जैसे जेम्स ब्राइस का मॉडल डेमोक्रेसीज़ (1921), हर्मन फाइनर का थियोरी एंड प्रैक्टिस ऑफ मॉडल गवर्नमेंट्स (1932) और कार्ल जे. फ्राइडरिक का कॉंस्टिटयूशनल गवर्नमेंट एंड डेमोक्रेसी (1937), रॉबेर्नो निकेल्स का पोलिटिकल पार्टीज़ (1915) की दिलचस्पी प्रधान रुप से संस्थाओं के तुलनात्मक अध्ययन, शक्ति का वितरण, और सरकार की विभिन्न परतों के बीच संबंध में थी। ये अध्ययन 'यूरो-केंद्रित' थे, अर्थात् ब्रिटेन, फ्राँस और जर्मनी जैसे यूरोपीय राष्ट्रों में संस्थाओं, सरकारों और शासन प्रणाली के प्रकारों के अध्ययन तक सीमित थे। अतः ये कहा जा सकता है कि ये अध्ययन वास्तव में इस दृष्टि से विशुद्ध रुप से तुलनात्मक नहीं थे कि इन्होंने बड़ी संख्या में राष्ट्रों को अपने विश्लेषण से बहिष्कृत किया। कुछ ही राष्ट्रों तक सीमित अध्ययन से प्राप्त किया गया सामान्यीकरण बाकी के विश्व के लिए मान्यता का वैध दावा नहीं कर सकता था। यहाँ इस बात पर बल दिया जाना चाहिए कि बाकी के विश्व का बहिष्कार, विश्व राजनीति में यूरोप का प्रभुत्व का सूचक था। सभी समकालीन इतिहास के केन्द्र में यूरोप रहा, बाकी के विश्व का अभिलोपन (मिटाते) करते हुए (उपनिवेशित या उपनिवेशवाद से मुक्त) (क) 'बिना इतिहास के जन' के रुप में या (ख) जिनके इतिहास पश्चिम के उन्नत देशों से जुड़े थे और उन प्रक्षेप-पथों का अनुसरण करने के लिए नियत थे जिन्हें पश्चिम के उन्नत देशों ने पहले से अपना रखा था। इस प्रकार उपरोक्त कृतियाँ पश्चिमी उदारवादी लोकतंत्र के मानक मूल्यों में अपने दृढ आधार को अभिव्यक्त करती हैं जिसने अपने साथ नृजातीय और सभ्यतागत श्रेष्ठता का सामान ढोया, और उपनिवेशों/भूतपूर्व उपनिवेशों के लिए एक आदेशात्मक चरित्र धारण किया।

1.3.3 द्वितीय विश्व युद्ध और उसके पश्चात्

उन्नीस सौ तीस के दशक में विश्व की राजनीतिक और आर्थिक स्थिति में परिवर्तन हुआ। सन् 1917 में रूस में बोल्शेविक क्राँति ने विश्व में समाजवाद को उत्पीड़ितों की एक विचारधारा के रुप में और पश्चिमी उदारवाद और पूँजीवाद के एक आलोचनात्मक विकल्प के रुप में उत्पन्न किया। द्वितीय विश्व युद्ध के अन्त के साथ, तक महत्वपूर्ण घटनाएँ घट चुकी थीं, जिनमें यूरोपीय (ब्रिटीश) वर्चस्व का पतन, विश्व राजनीति और अर्थव्यवस्था में संयुक्त राज्य अमेरिका का 'नए अधिपति' के रुप में

उत्थान और मोर्चाबंदी, और विश्व का विचारधारा की दृष्टि से दो गुटों में बंटवारा अर्थात् (पश्चिमी) पूँजीवाद और (पूर्वी) समाजवाद शामिल थे। जब तक द्वितीय विश्व युद्ध का अन्त हुआ, 'बाकी के विश्व' के अधिकांश हिस्से ने अपने को यूरोपीय साम्राज्यवाद से मुक्त कर लिया था। विउपनिवेशीकरण की एक अवधि के पश्चात् विकास, आधुनिकीकरण, राष्ट्र निर्माण, राज्य-निर्माण इत्यादि विचारों ने 'राष्ट्रीय नारों' के रुप में 'नए राष्ट्रों' के राजनीतिक अभिजनों के बीच वैधता के एक स्तर और यहाँ तक कि लोकप्रियता को भी प्रदर्शित किया। परन्तु वैचारिक दृष्टि से ये 'नए राष्ट्र' विकास के पश्चिमी पूँजीवाद मार्ग को अपनाने के लिए अब मजबूर नहीं थे। जहाँ एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के नए सत्ताधारी अभिजनों के बीच समाजवाद के अपने हिस्से के समर्थक थे, वहीं नव-स्वतंत्रता प्रापत देशों ने दोनों शक्ति गुटों से निरपेक्ष रहते हुए, अपने को उनसे दूर रखने का चेतनापूर्ण निर्णय लिया। इनमें से अनेक देशों ने, समाजवाद से मिलते-जुलते, विकास के अपने विशिष्ट मार्ग को विकसित किया जैसा कि तांज़ानिया में उज्जामा के मामले में और भारत में मिश्रित-अर्थव्यवस्था का मॉडल , जो पूँजीवाद और समाजवाद का मिश्रण था।

यह याद रखने योग्य है कि 1940 के दशक तक सरकारों का तुलनात्मक अध्ययन प्रधान रुप से संस्थाओं, उन्हें नियमित करने वाले कानूनी-संवैधानिक सिद्धांतों, और पश्चिमी (यूरोपीय) उदारवादी लोकतंत्रों में उनकी कार्य शैली का अध्ययन था। उपरोक्त गतिविधियों के संदर्भ में, 1950 के दशक के मध्य में, संस्थात्मक उपागम की एक सशक्त समालोचना की उत्पत्ति हुई। इस समालोचना की जड़ें व्यवहारवाद में थीं जिसका उदय राजनीति के विषय में एक नए आन्दोलन के रुप में हुआ, जिसका उद्देश्य विश्व को वैज्ञानिक कठोरता उपलब्ध कराना और राजनीति के एक विज्ञान को विकसित करना था। 'व्यवहारवादी आन्दोलन' के नाम से प्रसिद्ध, इसकी दिलचस्पी एक अन्वेषण को विकसित करना था जो परिमाणात्मक हो और जो मूल्यों से पृथक अनुभाविक तथ्यों के परीक्षण के लिए सर्वेक्षण तकनीकों पर आधारित हो ताकि मूल्य-तटस्थ, गैर-आदेशात्मक, वस्तुनिष्ठ टिप्पणियाँ और व्याख्याएँ उपलब्ध कराई जा सकें। व्यवहारवादियों ने 'लोग राजनीतिक दृष्टि से व्यवहार क्यों करते हैं, जैसा कि वे करते हैं और क्या उसके परिणामस्वरुप राजनीतिक प्रक्रियाएँ और प्रणालियाँ वैसे कार्य करती हैं, जैसा कि वे करती हैं जैसे प्रश्नों के उत्तर की खोज करते हुए सामाजिक यथार्थ के अध्ययन का प्रयास किया। लोगों के व्यवहारों में भिन्नताओं और राजनीति प्रक्रियाओं और राजनीतिक प्रणालियों के लिए उनके निहितार्थों के संबंध में इन 'क्यों' प्रश्नों ने संस्थाओं के कानूनी-औपचारिक पहलुओं से तुलनात्मक अध्ययन के केन्द्रबिन्दु को बदल दिया। इस प्रकार, 1955 में रॉय मेकरिडिस ने गैर-औपचारिक राजनीतिक प्रक्रियाओं से अधिक, औपचारिक संस्थाओं का विशेषाधिकरण करने, विश्लेषणात्मक होने के स्थान पर केस-स्टडी उन्मुख होने के लिए मौजूदा तुलनात्मक अध्ययनों की आलोचना की (मेकरिडिस, 1955)। हेरी एक्स्टीन इस ओर ध्यान दिलाता है कि इस अवधि के दौरान तुलनात्मक राजनीति की प्रकृति और विषय क्षेत्र में परिवर्तन राजनीति की धारणा की पुनर्संकल्पना और व्यापक पैमाने पर तुलनाओं के विकास की आवश्यकता का आग्रह करते हुए बदलती हुई विश्व राजनीति के प्रति संवेदनशीलता को दर्शाते हैं (एक्स्टीन, 1963)। तत्कालीन पारम्परिक और पश्चिमी विश्व पर लगभग अनन्य बल तथा इतनी सीमित तुलनाओं को ध्यान में रखते हुए जिस संकल्पनात्मक भाषा को विकसित किया गया था, इन सबको अस्वीकार करते हुए गैब्रील आलमंड और अमेरिकन

सोशल साईन्स रिसर्च काऊंसिल की कमिटी ऑन कंपेरेटिव पॉलिटिक्स (1954 में स्थापित) में उनके सहकर्मियों ने एक सिद्धांत और एक पद्धति को विकसित करना चाहा जो सभी प्रकार की राजनीतिक प्रणालियों को सम्मिलित करते हुए उनकी तुलना कर सके-आदिम या उन्नत, लोकतांत्रिक या गैर-लोकतांत्रिक, पश्चिमी या गैर-पश्चिमी।

एक भौगोलिक या प्रादेशिक दृष्टि से मामलों के विस्तार के साथ स्वयं राजनीति के बोध का भी विस्तार हुआ और विशेष रुप से उसकी अस्वीकृति द्वारा जिसे उस समय औपचारिक राजनीतिक संस्थाओं के अध्ययन में पारंपरिक और संकीर्ण रुप से परिभाषित बलाघात के रुप में देखा गया था। मात्र 'विधिवादिता' से भिन्न 'यथार्थवाद' या 'व्यवहार में' राजनीति पर बल द्वारा राजनीति की धारणा का विस्तार किया गया। इसने, इसके विषय क्षेत्र में औपचारिक दृष्टि से कम मात्रा में संरचनाबद्ध अभिकरणों, व्यवहारों और प्रक्रियाओं की कार्यप्रणाली को शामिल किया, उदाहरण के लिए, राजनीतिक दल, हित समूह, चुनाव, मतदान व्यवहार, मनोवृति इत्यादि। औपचारिक संस्थाओं के अध्ययन से ध्यान हटने के साथ, समानांतर रुप से स्वयं राज्य की धारणा की केन्द्रीयता का पतन हुआ। हमने इससे पूर्व उल्लेख किया था कि विश्व मंच पर बडी संख्या में राष्ट्रों के उदय ने ढ़ाँचों के विकास को अनिवार्य बना दिया जो व्यापक पैमाने पर तुलनाओं को सरल बनाएँगे। इसके फलस्वरुप राजनीतिक प्रणाली जैसी समावेशी और भावात्मक धारणाओं का उदय हुआ। 'प्रणाली' की इस धारणा ने राज्य की धारणा का स्थान ले लिया और विद्वानों को 'विधि-तर', 'सामाजिक' और 'सांस्कृतिक' संस्थाओं पर विचार करने में सक्षम बनाया, जो गैर-पश्चिमी राजनीति को समझने के लिए अत्यन्त आवश्यक थे। इस धारणा का अतिरिक्त लाभ ये था कि इसके विषय -क्षेत्र में 'राज्य से पूर्व'/गैर-राजकीय समाजों को और साथ ही भूमिकाओं और पदों को शामिल किया गया जिन्हें प्रत्यक्ष रुप से राज्य से संबंधित नहीं देखा गया। इसके अतिरिक्त, संस्थाओं के वास्तविक व्यवहारों और कार्यों पर बल दिए जाने में परिवर्तन के साथ, अनुसंधान की समस्याओं को इन संस्थाओं की कानूनी शक्तियों की दृष्टि से परिभाषित नहीं किया गया,बल्कि इस दृष्टि से कि वे वास्तव में क्या करते थे, वे एक-दूसरे से कैसे संबंधित थे और लोकनीति के निर्माण और कार्यान्वयन में उनकी क्या भूमिकाएँ थीं। इसके परिणामस्वरुप, संरचनात्मक-कार्यात्मक उपागम का उदय हुआ जिसमें कुछ निश्चित कार्यों को सभी समाजों के लिए अनिवार्य बताया गया और इन कार्यों के कार्यान्वयन और अनुपालन की तब तुलना विभिन्न प्रकार के औपचारिक और अनौपचारिक ढ़ाँचों के आर-पार की जानी थी। यद्यपि प्रणालियों के सार्वभौमिक ढ़ाँचों और संरचनाओं-कार्यों ने पश्चिमी विद्वानों को राजनीतिक प्रणालियों, संरचनाओं और व्यवहारों की एक विस्तृत श्रेणी का एक एकल प्रतिमान के अन्तर्गत अध्ययन करने में सक्षम बनाया, 'नए राष्ट्रों' के आगमन ने पश्चिमी तुलनावादियों को उस वस्तु का अध्ययन करने का अवसर दिया जिसे उन्होंने आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन के रुप में देखा। वियार्ड ध्यान दिलाता है कि साठ के दशक (1960) की इस अवधि में ही तुलनात्मक राजनीति के अधिकांश समकालीन विद्वान विकास की पराकाष्ठा तक पहुँचे। इनमें से अधिकांश विद्वानों के लिए (व्यंगात्मक रुप से) 'नए राष्ट्र', सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के अध्ययन के लिए 'जीवित प्रयोगशालाएँ' बन गए। वियार्ड उन 'उत्तेजक दिनों' का वर्णन करता है जिन्होंने राजनीतिक परिवर्तन के अध्ययन के लिए अनोखे अवसर प्रदान किए और नई पद्धतियों और उनके अध्ययन के उपागमों के विकास को देखा।

इस अवधि के दौरान ही तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र में कुछ सर्वाधिक अभिनव और उत्तेजक सैद्धांतिक और संकल्पनात्मक उपागमों को प्रस्तुत किया गया: राजनीतिक संस्कृति का अध्ययन, राजनीतिक सामाजीकरण, विकासवाद, पराश्रितता और परस्पर निर्भरता, कॉरपोरेटवाद (सामूहिक नियंत्रणवाद), नौकरशाही-अधिनायकवाद और लोकतंत्र की दिशा में बाद के परिवर्तन इत्यादि (वियार्ड, 1998)। इस अवधि में सार्वभौमवादी मॉडल (प्रतिमानों) की बाढ़ लग गई जैसे डेविड ईस्टन का 'पोलिटिकल सिस्टम', कार्ल ड्यूश का 'सोशल मोबिलाइज़ेशन' और एडवर्ड शिल का 'सेन्टर एंड पेरिफेरी'। ऐंप्टर, रोक्कन, आइज़ेनस्टाड्ट और वार्ड के आधुनिकीकरण के सिद्धांत और आलमंड, कोल्मेन, पइ और बर्बा के राजनीतिक विकास के सिद्धांत ने भी सार्वभौमिक प्रासंगिकता का दावा किया। इन सिद्धांतों का सांस्कृतिक और विचारधारा की सीमाओं के आर-पार लागू होने और इनके द्वारा सर्वत्र राजनीतिक प्रक्रिया की व्याख्या करने का दावा किया गया। इस अवस्था में, तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण के विकास ने सैनिक संधियों और विदेशी सहायता के माध्यम से संयुक्त राज्य अमेरिका के अन्तर्राष्ट्रीय हस्तक्षेप से मेल खाया। इस अवधि के दौरान का अधिकांश अध्ययन न केवल अनुसंधान संस्थान द्वारा वित्तपोषित किया गया बल्कि उसे अमेरिकी विदेश नीति के उद्देश्यों के अनुकूल भी बनाया गया। इनमें से सबसे प्रतीकात्मक थे लैटिन अमेरिका में 'प्रोजेक्ट केमलॉट' और भारत में 'हिमालयन प्राजेक्ट'। इस अवधि की घोषणा घाना पर ऐप्टर के अध्ययन जैसी कृतियों के प्रकाशन द्वारा हुई। 1960 में प्रकाशित आलमंड और कोल्मेन की 'पॉलिटिक्स ऑफ डेवेलपिंग एरियास' ने नए तुलनात्मक राजनीति आन्दोलन' के चरित्र को परिभाषित किया। 1969 में अमेरिका में 'कंपेरेटिव पॉलिटिक्स ' शीर्षक से प्रकाशित एक नई पत्रिका ने इस प्रवृत्ति की पराकाष्ठा को प्रतिबिंबित किया (मोहन्ती, 1975)। 'विकासवाद' शायद इस समय का प्रधान संकल्पनात्मक प्रतिमान था। काफी हद तक, विकासवाद में दिलचस्पी 'विकासशील राष्ट्रों' में अमेरिकी विदेश नीति के हितों से उत्पन्न हुई ताकि मार्क्सवाद-लेनिनवाद के आकर्षणों का विरोध हो सके और उन्हें विकास के एक गैर-साम्यवादी पथ की ओर अभिमुख किया जा सके (वियार्ड, 1998)।

उत्तर-व्यवहारवाद

व्यवहारवादी क्राँति के समर्थक जो राजनीति विज्ञान में वैज्ञानिक कठोरता लाना चाहते थे, इस बात से निराश हुए कि ये विषय उस समय के सामाजिक और राजनीतिक उथल-पुथल के बारे में न तो पूर्वानुमान कर पाया और न ही अध्ययन, उसके नए पर्यावरणीय और नारीवादी आन्दोलन, उसका युद्ध -विरोधी परिप्रेक्ष्य, नागरिक अधिकारों से संबंधित उसकी चिंताएँ इत्यादि। उनके द्वारा दो बलों के बीच सामंजस्य स्थापित करने के प्रयास: राजनीति विज्ञान को और कठोर और अधिक प्रासंगिक बनाने के परिणामस्वरुप उत्तर-व्यवहारवादी आन्दोलन हुआ। 1969 में डेविड ईस्टन का अमेरिकन पोलिटिकल स्टडीज़ एसोसियेशन का अध्यक्षीय अभिभाषण इस आन्दोलन की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति करता है। ईस्टन ने 'प्रासंगिकता के सिद्धांत' की रुपरेखा निम्नलिखित सात मूल सूत्रों के साथ प्रस्तुत की जो उत्तर-व्यवहारवादी आन्दोलन का प्रमाण-चिन्ह बन गए।

- तत्व का तकनीक पर प्रभुत्व होना चाहिए। क्या अध्ययन किया जाता है, ये इससे अधिक महत्वपूर्ण है कि उसका कैसे अध्ययन किया जाता है।

- राजनीति जैसी है, उनका अनुभाविक अध्ययन मात्र करने का दावा एक रूढ़िवादी दृष्टिकोण का समर्थन करना है क्योंकि वह जो है, उसपर ध्यान केंद्रित करता है, न कि उस पर जो संभव है।
- पद्धति में अत्यधिक कृत्रिमता अधिकांश राजनीति के क्रूर यर्थाथ को धुंधला कर देती है और राजनीति विज्ञान को अत्यावश्यक मानवीय जरुरतों को संबोधित करने से रोकती है।
- विज्ञान निरपेक्ष नहीं हो सकता: आप किस विषय के अध्ययन का चयन करते हैं, यह मतावलोकन द्वारा संचालित होता है और उस कार्य का प्रयोग किस प्रकार किया जाना चाहिए वह मूल्यों द्वारा परिचालित होना चाहिए।
- बुद्धि जीवियों की भूमिका 'सभ्यता के मानवोचित मूल्यों' को प्रोत्साहित करना है।
- जानने का अर्थ है, करने के दायित्व को निभाना या अपने ज्ञान को कार्यान्वित करना वैज्ञानिकों का एक विशेष कर्तव्य है।
- संलग्न होने की यह प्रतिबद्धता संस्थागत होनी चाहिए और विद्वानों और विश्वविद्यालयों के संघों के माध्यम से अभिव्यक्त होनी चाहिए। वे अलग खडे नहीं रह सकते: व्यवसायों का राजनीतिकरण अपरिहार्य है और वांछनीय भी।

1.3.4 1970 का दशक और विकासवाद की चुनौतियाँ

1970 के आसपास भावात्मक प्रतिमानों का पक्ष लेने के कारण विकासवाद की आलोचना हुई जिसने विशिष्ट राजनीतिक/सामाजिक/सांस्कृतिक प्रणालियों के बीच भिन्नताओं को दबाया ताकि उनका अध्ययन एक एकल सार्वभौमवादी संरचना के अन्तर्गत किया जा सके। इन आलोचनाओं ने इन प्रतिमानों की 'नृजातीयता' पर बल दिया और अल्पविकास के एक सिद्धांत को कार्यान्वित करने के लिए तृतीय विश्व पर ध्यान केंद्रित किया। इन्होंने विकासशील राष्ट्रों के पिछडेपन के समाधान पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता पर बल दिया। 1970 के दशक के प्रारंभिक काल में विकासवाद के लिए जो दो मुख्य चुनौतियाँ उत्पन्न हुई और जिन्होंने व्यापक ध्यान आकर्षित किया, वे थी (क) पराश्रितता और (ख) कॉर्पोरेटवाद। पराश्रितता के सिद्धांत ने विकास में घरेलू वर्ग कारकों और (ख) अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार और शक्ति कारकों की अनदेखी के लिए विकासवाद के प्रधान मॉडल (प्रतिमान) की आलोचना की। इसने अमेरिकी विदेश नीति और बहुराष्ट्रीय निगमों की विशेष रुप से आलोचना की और जिसे विकासवाद में सत्य माना गया था, उसके विपरीत, ये सुझाव दिया कि पहले से ही औद्योगीकृत राष्ट्रों का और विकासशील राष्ट्रों का विकास एक साथ नहीं हो सकता। इसके स्थान पर, पराश्रितता के सिद्धांत ने तर्क दिया कि पश्चिम का विकास, गैर-पश्चिम के कंधों पर और उनके विकास की कीमत पर हुआ था। इस विचार को कि पूँजीवाद का प्रसार विश्व के अनेक हिस्सों में, विकास को नहीं, अल्पविकास को प्रोत्साहित करता है, आंद्रे गुंडर फ्रैंक के 'केपिटलिज़्म एंड अंडर-डेवलपमेंट इन लैटिन अमेरिका' (1967), वॉल्टर रॉडनी के 'हाऊ यूरोप अंडरडेवलप्ड़ अफ्रीका' (1972) और मॉल्कम कैल्डवैल के 'द वेल्थ ऑफ सम नेशन्स' (1979) में सम्मिलित किया गया। परन्तु पराश्रितता के सिद्धांत के मार्क्सवादी आलोचकों ने इस ओर ध्यान दिलाया कि अधिशेष निष्कर्षण के माध्यम से शोषण की प्रकृति को केवल राष्ट्रीय स्तर पर न देखकर, केन्द्र के महानगरीय बुर्जुआ और परिधि के देशज बुर्जुआ द्वारा विश्व-व्यापी पूँजीवादी प्रणाली में क्रियाशीलता के दौरान, उनके बीच

गठबंधनों के एक अधिक जटिल प्रतिमान के हिस्से के रुप में देखा जाना चाहिए। कॉर्पोरेटवादी उपागम ने विकासवाद की उसकी यूरो-अमेरिकन नृजातिकेंद्रण के लिए आलोचना की और ये संकेत दिया कि राज्य और राज्य-समाज संबंधों को संगठित करने के वैकल्पिक जैविक, कॉर्पोरेटवादी, अक्सर सत्तावादी तरीके हैं। (चिलकॉट, 1994: 16)

1.3.5 1980 का दशक : राज्य की वापसी

1970 के दशक के अन्त और 1980 के दशक के प्रारंभिक काल के दौरान, विकासवाद के विरुद्ध तीखी प्रतिक्रिया को प्रतिबिंबित करते हुए, तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र में अनेक सिद्धांतों और विषय वस्तुओं का उदय हुआ। इनमें नौकरशाही-सत्तावाद, परिवर्तन की देशज अवधारणाएँ, लोकतंत्र की दिशा में परिवर्तन, संरचनात्मक समायोजन की राजनीति, नव-उदारवाद और निजीकरण शामिल थे। जहाँ कुछ विद्वानों ने इन गतिविधियों को उस क्षेत्र की एकता को दुर्बल बनाने और तोडने के रुप में देखा, जिस पर विकासवाद का प्रभुत्व था, वहीं दूसरों ने इन्हें स्वस्थ विविधता को जोडने, वैकल्पिक उपागमों को उपलब्ध करने और नए विषय क्षेत्रों का प्रतिपादन करने के रुप में देखा। आलमंड, जिसने 1950 के दशक के अन्त में ये तर्क दिया था कि राज्य की धारणा का स्थान राजनीतिक प्रणाली को मिलना चाहिए जो वैज्ञानिक अन्वेषण के अनुकूलनीय थी, और ईस्टन, जिसने एक राजनीतिक प्रणाली के मानदंडों और अवधारणाओं के निर्माण का दायित्व लिया था, 1980 के दशक के मध्य तक भी राजनीकि अध्ययन के केन्द्र के रुप में राजनीतिक प्रणाली के महत्व पर उसने तर्क प्रस्तुत किया। फिर भी साठ और सत्तर के दशकों में लैटिन अमेरिका में नौकरशाही सत्तावाद की कृतियों में राज्य को अपने हिस्से की मान्यता मिली विशेष रुप से आर्जेंटीना में ग्वियेर्मो ओ 'डॉनल की कृतियों में, उदाहरण के लिए 'इकोनॉमिक मॉडर्नाइज़ेशन एंड ब्यूरोक्रैटिक अथॉरिटेरियनिज़्म' (1973)। रैल्फ मिलिबैंड की 'द स्टेट इन कैपिटलिस्ट सोसाइटी' (1969) ने भी दिलचस्पी को कायम रखा। निकोस पूलांट्ज़ास की 'स्टेट, पावर, सोशलिज़्म' (1978) और राजनीतिक समाजवादियों पीटर एवन्स, थेडा स्कोक्पॉल एवं अन्य की 'ब्रिंगिंग द स्टेट बैक इन' (1985) के साथ राज्य पर फिर से ध्यान केंद्रित करने का प्रयास किया गया।

1.3.6 बीसवीं सदी का अंत: वैश्वीकरण और उभरती हुई प्रवृत्तियाँ/संभावनाएँ

क) प्रणालियों का अवश्रणियन: 1960 से 1980 की अवधि में तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण के अधिकांश विकास को केस के रुप में देखा जा सकता है, जिसमें और चरों को मॉडल (प्रतिमानों) से जोडा गया जैसे नीति, विचारधारा, शासनकार्य का अनुभव इत्यादि। फिर भी, 1980 के दशक में, सामान्य सिद्धांत से हटकर, संदर्भ की प्रासंगिकता पर बल देने की दिशा में परिवर्तन हुआ। आंशिक रुप से, ये प्रवृत्ति सामाजिक विज्ञानों में ऐतिहासिक अन्वेषण के नवीकृत प्रभाव को प्रतिबिंबित करती है, और विशेष रुप से एक 'ऐतिहासिक समाजशास्त्र' की उत्पत्ति को जो परिघटनाओं को उस अत्यन्त विस्तृत या 'समग्र' संदर्भ में समझने का प्रयास करता है जिसमे वे घटित होती हैं (थेडा स्कोक्पॉल और एम. सामर्स, 1980)। मॉडल्स से दूर हटते हुए निश्चित राष्ट्रों और केस की और गहन समझ की ओर परिवर्तन हुआ है जहाँ अधिक गुणवतात्मक और

संद्रिभत डेटा (आँकडों) का मूल्यांकन किया जा सकता है और जहाँ विशिष्ट संस्थात्मक परिस्थितियों या निश्चित राजनीतिक संस्कृतियों का ध्यान रखा जा सकता है। अतः हम सांस्कृतिक दृष्टि से अधिक विशिष्ट अध्ययनों (उदाहरण के लिए, अंग्रेजी बोलने वाले राष्ट्र, इस्लामी राष्ट्र), और राष्ट्रीय दृष्टि से विशिष्ट राष्ट्रों (उदाहरण के लिए इंग्लैंड, भारत), और यहाँ तक कि संस्थात्मक दृष्टि से विशिष्ट राष्ट्रों (उदाहरण के लिए एक विशिष्ट शासन प्रणाली के अधीन भारत) पर नया जोर देखते हैं। जहाँ 'भव्य प्रणालियों' और मॉडल निर्माण पर बल घटा, वहीं विशिष्ट संदर्भों और संस्कृतियों पर बल देने का अर्थ ये रहा है कि तुलनाओं के पैमाने को नीचे लाया गया। 'छोटी प्रणालियों' या क्षेत्रों के स्तर पर तुलनाएँ कायम रहीं, उदाहरण के लिए, इस्लामी विश्व, लैटिन अमेरिका के राष्ट्र, उप-सहारा आफ्रीका, दक्षिणी एशियया इत्यादि।

ख) नागरिक समाज और लोकतांत्रीकरण उपागम: सोवियत संघ के विघटन ने 'इतिहास का अन्त' धारणा का प्रचलन किया। अपने लेख "द एंड ऑफ हिस्ट्री?" (1989), जिसे आगे चलकर 'द एंड ऑफ हिस्ट्री एण्ड द लास्ट मैन' (1992) शीर्षक से पुस्तक के रुप में विकसित किया गया, फ्राँसिस फुकुयामा ने तर्क दिया कि' मानव सरकार के अंतिम रुप' में उदारवादी लोकतंत्र की मान्यता और विजय के साथ, विचारों का इतिहास समाप्त हो चुका था। पश्चिमी उदारवादी लोकतंत्र की प्रधानता पर बल देने के लिए 'इतिहास का अंत' निबन्ध का प्रयोग, एक प्रकार से 1950 के दशक की 'विचारधारा का अंत' बहस की याद दिलाता है जो शीत युद्ध की पराकाष्ठा के दौरान और पश्चिम में साम्यवाद के पतन के संदर्भ में उत्पन्न हुई थी। पश्चिमी उदारवादी विद्वानों ने प्रस्तावित किया कि पश्चिम के औद्योगीकृत समाजों में हुई आर्थिक उन्नति ने उन कल्पित राजनीतिक समस्याओं का हल कर दिया था जो औद्योगीकरण के साथ चलते हैं, उदाहरण के लिए, स्वतंत्रता के मुद्दे और राज्य शक्ति, श्रमिकों के अधिकार इत्यादि। विशिष्ट रुप से, अमेरिकी समाजशास्त्री, डैनियल बेल ने अपनी कृति 'द एंड ऑफ आइडियॉलजी?: ऑन द एग्जॉशन ऑफ पोलिटिकल आइडियास इन द 1950 ज़', (1960) में ध्यान दिलाया कि इस गतिविधि के कारण एक वैचारिक सर्वसम्मति थीं, या राजनीतिक व्यवहार के मुद्दों के संबंध में विचारधारात्मक मतभेदों की आवश्यकता के स्थगन की थी। नब्बे के दशक के पूर्वार्ध में 'एंड ऑफ हिस्ट्री' के विचार को अस्सी के दशक की एक अन्य परिघटना से जोडा गया, 'वैश्वीकरण'। वैश्वीकरण परिस्थितियों के एक समूह से संबंध रखता है, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकीय, आर्थिक और राजनीतिक, जिन्होंने विश्व को इस तरह जोड़ दिया है कि विश्व के एक हिस्से की घटनाएँ, एक अन्य हिस्से की घटनाओं को निश्चित रुप से प्रभावित कर सकती हैं या उनके द्वारा प्रभावित हो सकती हैं। ये उल्लेख किया जा सकता है कि वैश्विक विश्व में वह केन्द्रबिन्दु या केन्द्र जिसके चारों ओर घटनाएँ विश्व भर में घटित होती हैं, वह अभी भी पश्चिमी पूँजीवाद है। तथाकथित पूँजीवाद के विजय के संदर्भ में, नागरिक समाज और लोकतंत्रीकरण के अध्ययन के जिन उपागमों को लोकप्रियता प्राप्त हुई है, वे नागरिक समाज को महत्व देते हैं जिसे आधुनिक पूँजीवादी विश्व में प्रवेश के लिए व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा के संबंध में परिभाषित किया गया है। फिर भी एक अन्य महत्वपूर्ण प्रवृत्ति पाई जाती है जो नागरिक समाज और लोकतंत्रीकरण के

प्रश्नों को अपना प्राथमिक केन्द्रबिंदु बनाना चाहती है। यदि एक ओर बाज़ारी लोकतंत्र के विकास में जुटे पश्चिमी पूँजीवाद की समकालीन दिलचस्पी के अनुकूल अध्ययन पाए जाते हैं तो वहीं दूसरी ओर ऐसे अनेक अध्ययन भी पाए जाते हैं जो स्वायत्तता की माँग, देशज संस्कृति के अधिकार से जुड़े जन आन्दोलनों, जनजातियों, दलितों, निम्न जातियों के आन्दोलनों, और नारी आन्दोलन और पर्यावरण आन्दोलन के पुनरुत्थान पर विचार करते हैं, जहाँ पूँजी के हित, जनता के हितों के विरोध में होते हैं और वैश्विक पूँजी के दौर में परिवर्तन और मुक्ति की भाषा का प्रतिनिधित्व करते हैं। अतः पहचान, पर्यावरण, नृजातीयता, लैंगिकता, जाति इत्यादि के मुद्दों से संबंधित चिन्ताओं ने तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण को एक नया आयाम है।

ग) सूचना संकलन और प्रसार: सूचना एवं संचार टैक्नोलॉजी वैश्वीकरण का एक महत्वपूर्ण पहलू और कारक रहा है। इसने डेटा (आँकडों) के उत्पादन, संकलन और विश्लेषण को और सरल बना दिया है और विश्वभर में उनके अधिक तेज और विस्तृत प्रसार को सुनिश्चित कर दिया है। इन परिवर्तनों ने न केवल डेटा की उपलब्धि में वृद्धि की है, बल्कि नए मुद्दों और प्रकरणों की उत्पत्ति को संभव बनाया है जो राष्ट्र-राज्य के दायरे के पार विस्तृत होते हैं। बदले में नए प्रकरण समकालीन वैश्वीकृत विश्व के राजनीतिक पर्यावरण का एक महत्वपूर्ण/प्रभावशाली पहलू बनते हैं। सामाजिक आन्दोलन संगठनों का वैश्विक तंत्र, सक्रियतावादियों का वैश्विक तंत्र इस प्रकार का एक महत्वपूर्ण पहलू है। लोकतंत्रीकरण के विचारों का प्रसार ऐसे तंत्रीकरण का एक महत्वपूर्ण परिणाम है। मेक्सिको के दक्षिणी प्राँत कियापास में ज़पास्तिस्ना विद्रोह ने अधिकारों, सामाजिक इंटरनेट और वैश्विक मीडिया का प्रयोग किया। मानव अधिकारों के प्रोत्साहन और संरक्षण से जुडे मुद्दों के संबंध में चिन्ता, जो समकालीन विश्व में प्रासंगिक बन गई है।

अभ्यास प्रश्न 2

नोट: i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।
ii) इकाई के अन्त में अपने उत्तर के लिए संकेतों को देखें।

1. क्या ये कहना संभव है कि तुलनात्मक राजनीति का संबंध केवल सरकारों के अध्ययन की एक पद्धति से है?

.....

.....

.....

2. तुलनात्मक राजनीति की प्रकृति, क्षेत्र और विषय-क्षेत्र का विकास विभिन्न ऐतिहासिक अवधियों में बदलती हुई सामाजिक-राजनीतिक चिंताओं की प्रतिक्रिया के रुप में हुआ है। टिप्पणी करें।

.....

.....

.....

1.4 राजनीति का तुलनात्मक अध्ययन: उपयोगिता

तुलनात्मक राजनीति की उपयोगिता का प्रश्न राजनीतिक यथार्थ के संबंध में हमारी समझ को बढ़ाने में इसकी उपयोगिता और प्रासंगिकता से है। इसका उद्देश्य ये जानकारी प्राप्त करना है कि इस यर्थाथ को समझने के लिए तुलनात्मक अध्ययन हमारी किस प्रकार सहायता करता है। प्रथम एवं सर्वाधिक महत्वपूर्ण हमें ये ध्यान में रखना होगा कि राजनीतिक व्यवहार सभी मनुष्यों के लिए सामान्य है और विश्व भर में इसकी अभिव्यक्ति अनेक विधियों से और अनेक सामाजिक और संस्थात्मक व्यवस्थाओं में होती है। ये कहा जा सकता है कि इन संबंधित और समानांतर रुप से भिन्न राजनीतिक व्यवहारों और प्रतिमानों की समझ स्वयं राजनीति के बारे में हमारी समझ का एक अभिन्न हिस्सा है। सामान्य तौर पर, एक ठोस और विस्तृत समझ तुलनाओं का रुप लेगी।

1.4.1 सैद्धांतिक सूत्रीकरण के लिए तुलना

यद्यपि तुलनाएँ हमारी सारी तर्क बुद्धि और चिंतन का अंतर्निहित हिस्सा हैं, वहीं अधिकांश तुलनावादी ये तर्क देंगे कि राजनीति का एक तुलनात्मक अध्ययन चेतनापूर्ण तुलनाएँ करने का प्रयास करता है ताकि ऐसे निष्कर्षों तक पहुँचा जा सके जिनका सामान्यीकरण किया जा सकता है, अर्थात् अनेक मामलों के लिए ये सत्य हों। ऐसे सामान्यीकरणों को करने के लिए, राष्ट्रों के बारे में केवल सूचना एकत्रित करना पर्याप्त नहीं है। तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण में सिद्धांत-निर्माण परीक्षण पर बल है जिसमें राष्ट्र इकाइयों या अध्ययन मामले के केस का काम करते हैं। अतः तुलनात्मक अनुसंधान कैसे किया जाना चाहिए, इस संबंध में नियमों और मानदंडों को विकसित करने पर काफी बल दिया जाता है और जोरदार प्रयास किए जाते हैं। एक तुलनात्मक अध्ययन ये सुनिश्चित करता है कि सभी सामान्यीकरण एक से अधिक परिघटना के निरीक्षण या अनेक परिघटनाओं के बीच संबंधों के निरीक्षण पर आधरित है।

1.4.2 वैज्ञानिक कठोरता के लिए तुलनाएँ

जैसा कि अगली इकाई में व्याख्या की जाएगी, तुलनात्मक पद्धति इन सिद्धांतों को वैज्ञानिक आधार और कठोरता प्रदान करती है। जो सामाजिक वैज्ञानिक परिशुद्धता मान्यता और विश्वसनीयता पर बल देते हैं, वे सामाजिक विज्ञानों में तुलनाओं को अपरिहार्य मानते हैं क्योंकि ये सामाजिक परिघटनाओं के अध्ययन में 'नियंत्रण' का अद्वितीय अवसर प्रस्तुत करते हैं। (सारटोरी, 1994)।

1.4.3 तुलनाएँ जो संबंधों में व्याख्याओं की ओर ले जाएँ

एक लम्बे समय तक तुलनात्मक राजनीति केवल समानताओं और भिन्नताओं को ढूंढत्ती हुई नज़र आई और उसने इस प्रयास को राजनीतिक परिघटनाओं के वर्गीकरण, द्वि भागीकरण या ध्रुवीकरण की ओर निर्देशित किया। फिर भी, तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण समानताओं और भिन्नताओं की पहचान करना मात्र नहीं है। अनेक विद्वानों का मानना है कि तुलनाओं का उद्देश्य "समानताओं और भिन्नताओं को पहचाने" या तथाकथित "तुलना और विषमता उपागम" से परे जाते हुए अंत में संबंधों

के एक विस्तृत ढाँचें के अन्तर्गत राजनीतिक परिघटनाओं का अध्ययन करना है। ऐसा माना जाता है कि ये हमारी समझ को गहन बनाने में मदद करेगा और राजनीतिक परिघटनाओं का उत्तर देने और व्याख्या करने के स्तरों का विस्तार करेगा। दूसरे शब्दों में, तुलनात्मक राजनीति का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य केवल दूसरों के बारे में अविश्वासपूर्ण होना नहीं है बल्कि नए प्रमाण और तर्कों के प्रकाश में अपनी खुद की प्रणाली और धारणाओं से सवाल करना है।

अभ्यास प्रश्न 3

नोट: i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) इकाई के अन्त में अपने उत्तर के लिए संकेतों को देखें।

1. आपके अनुसार राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन की क्या उपयोगिता है?

.....

.....

.....

.....

2. वे कौन सी विशेषताएँ हैं जो तुलनात्मक राजनीति की प्रकृति और विषय-क्षेत्र का निर्धारण करते हैं?

.....

.....

.....

.....

3. बीसवीं सदी में तुलनात्मक राजनीति के विकास की रुपरेखा का वर्णन प्रस्तुत करें जिसमें स्पष्ट करें (क) द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व और उसके पश्चात् की अवधि की विशिष्टताएँ (ख) विकासवाद और उसकी समालोचना (ग) बीसवीं सदी के उत्तरार्ध की गतिविधियाँ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

1.5 सारांश

राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन की प्रकृति और विषयक्षेत्र का संबंध उसकी विषय-वस्तु, उसके अध्ययन क्षेत्र, जिस अनुकूल अवस्थिति से अध्ययन किया जाता है और जिस उद्देश्य की ओर अध्ययन निर्दिष्ट होता है, इन सब से है। परन्तु ये स्थिर नहीं रहे हैं और समय के साथ-साथ इनमें बदलाव आया है। जहाँ सबसे प्रारंभिक अध्ययनों की दिलचस्पी सरकारों और शासन व्यवस्थाओं के वर्गीकरण और निरीक्षण में थी, वहीं उन्नीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी के प्रारंभ में तुलनात्मक राजनीति की दिलचस्पी पश्चिमी देशों की संस्थाओं की औपचारिक कानूनी संरचनाओं के अध्ययन मे थी। द्वितीय विश्व युद्ध के अन्त में विश्व मंच पर अनेक 'नए राष्ट्रों' का उदय हुआ जिन्होंने औपनिवेशिक प्रभुता से अपने को स्वतंत्र कर लिया था। उदारवाद के प्रभुत्व को साम्यवाद के उदय और विश्व मंच पर सोवियत संघ की सशक्त उपस्थिति द्वारा चुनौती दी गई। इस मोड़ पर तुलनावादियों के बीच सोच में बदलाव आया। वे अब उभरते हुए राजनीतिक व्यवहारों और प्रक्रियाओं की विविधता का अध्ययन करने लगे परन्तु, एक एकल व्यापक ढाँचे के अन्तर्गत। इसके साथ, 'प्रणालियाँ' और ' संरचनाएँ-कार्य' की अवधारणा का प्रचलन हुआ। इन ढाँचों का प्रयोग पश्चिमी विद्वानों, विशेष रुप से अमेरिका के विद्वानों द्वारा विकासवाद, आधुनिकीकरण इत्यादि जैसी एक ओर नवोदित राष्ट्रों के राजनीतिक अभिजनों को विकास, राष्ट्र-निर्माण और राज्य -निर्माण की अवधारणाएँ आकर्षक लगी, कई मामलों में उन्होंने अपने स्वयं के वैचारिक दृष्टिकोणों को विकसित किया और दोनों वैचारिक गुटों से निरपेक्ष रहने का निर्णय लिया। 1980 के दशक के उत्तरार्ध में 'प्रणाली' के एक व्यापक ढाँचे के अन्तर्गत, राजनीति का तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन पर से केन्द्रण हटने लगा और क्षेत्रीय प्रणालीगत अध्ययनों का महत्व बढ़ने लगा। इन अध्ययनों में राज्य पर केन्द्रण ने नागरिक समाज के भीतर शक्ति संरचनाओं और उसके राजनीतिक स्वरुपों के अध्ययन के पुनरुत्थान को सूचित किया, जिसे, तुलनात्मक राजनीति में प्रणालियों और संरचनाओं-कार्यों के आगमन से हानि पहुँची थी। इस दौर में, सोवियत संघ के विघटन ने उदारवाद और पूँजीवाद की विजय को चिन्हित करते हुए पश्चिमी विद्वानों को 'इतिहास का अंत' की घोषणा करने के लिए उत्तेजित किया। पूँजी का वैश्वीकरण, 1980 के दशक के उत्तरार्ध की एक महत्वपूर्ण विशेषता है, जो अब तक कायम है और विश्व के देशों के बीच अपने आपको तकनीकी, आर्थिक और सूचना अनुबंधों में अभिव्यक्त करता है, उसने तुलनावादियों को भी 'लोकतंत्र की ओर संक्रमण', 'वैश्विक बाज़ार' और 'नागरिक समाज' जैसी सार्वभौमवादी, समांगीकरणीय अभिव्यक्तियों को अपनाने के लिए प्रभावित किया है। ऐसी अभिव्यक्तियाँ हमें ये विश्वास दिलाना चाहती हैं कि वास्तव में कोई भिन्नताएँ, अनिश्चय और संघर्ष नहीं बचे हैं जिनकी तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य से व्याख्या की आवश्यकता है। फिर भी परिघटनाओं को परखने का एक अन्य तरीका है और अनेक विद्वान नागरिक समाज के पुनरुत्थान को वैश्विक पूँजीवाद के लिए चुनौतियों की दृष्टि से देखते हैं जो विश्व भर में जन-आन्दोलनों और मज़दूर संघ सक्रियवाद से निकलते हैं।

1.6 मुख्य शब्द

नागरिक समाज : इस शब्द के विवादस्पद अर्थ हैं। कुल मिलाकर इसे एक देश के जीवन का हिस्सा माना जाता है जो न तो सरकार है और न ही अर्थव्यवस्था, बल्कि वह क्षेत्र है जिसके भीतर हित समूह, राजनीतिक दल और व्यक्ति, राजनीतिक रुप से उन्मुख तरीकों में एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं।

नियंत्रण : वैज्ञानिक अनुसंधान में नियंत्रण एक मानक व्यवस्था या स्थिति को उपलब्ध करने के लिए परीक्षण के दौरान नियमन और जाँचने की एक महत्वपूर्ण कार्यविधि या यंत्रावली है।

यूरोकेंद्रित : इसका संबंध उन पक्षपातपूर्ण (और विकृत) दृष्टिकोणों से है जो अन्य संस्कृतियों और समाजों पर यूरोपीय विचारों, मूल्यों, धारणाओं और सिद्धांतों के लागू किए जाने से प्रकट होते हैं।

प्रणाली विज्ञान : अनुसंधान के विभिन्न तरीकों का अध्ययन, जिसमें अनुसंधान प्रश्नों की पहचान, निश्चित घटनाओं और राजनीतिक परिणामों की व्याख्या के लिए सिद्धांतों का सूत्रीकरण, और अनुसंधान परिकल्पना का विकास भी शामिल है।

नव-उदारवाद : शास्त्रीय उदारवाद का एक उन्नत रुप जिसमें राजनीतिक अर्थव्यवस्था बाज़ारी व्यक्तिवाद और न्यूनतम राज्य नियंत्रणवाद पर संकेंद्रित होती है।

मानकीय : व्यवहार के मूल्यों और मानदंडों का निर्धारण जो 'क्या है' से नहीं बल्कि' क्या होना चाहिए' से संबंधित प्रश्नों पर विचार करना है।

सिद्धांत : एक सिद्धांत व्यवस्थित रुप से परस्पर संबंधित विचारों, रचनाओं या प्रस्तावों का एक समूह/सेट है जिसका अभिप्राय एक निश्चित परिघटना, घटनाओं या व्यवहार की व्यवस्थित व्याख्या करना है। सामाजिक विज्ञान में सिद्धांत, सामाजिक व्यवहारों, घटनाओं और परिघटनाओं के लिए व्याख्या प्रस्तुत करते हैं।

1.7 संदर्भ

चिलकॉट, रॉनल्ड एच. (1994). "भाग 1: परिचय", रॉनल्ड एच. चिलकॉट, थ्योरीज़ ऑफ कंपेरेटिव पॉलिटिक्स: द सर्च फॉर ए पेराडाइम रीकंसिडर्ड, वेस्टव्यू प्रेस, बोल्डर, (द्वितीय संस्करण)

लैंडमैन, टॉड. (2000). इश्यूज़ एंड मेथड्स इन कंपेरेटिव पॉलिटिक्स: एन इंट्रोडक्शन, राउटलेज, लंदन.

लिम, टिमोथी सी. (2006). डूइंग कंपेरेटिव पॉलिटिक्स: एन इंट्रोडक्शन टू एप्रोचस एंड इश्यूज़, बोल्डर, सीओ: लिन्न रिएन्नर.

मेर, पीटर. (1996). "कंपेरेटिव पॉलिटिक्स: एन आवरव्यू", आर.ई. गाडिनेंड एच. क्लिंगमैन (सं0), द न्यू हैंडबुक ऑफ पोलिटिकल साइन्स, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफोर्ड.

मोहन्ती, मनोरंजन. (2000). 'मूविंग द सेंटर इन द स्टडी ऑफ पोलिटिकल थॉट एंड पोलिटिकल थ्योरी', मनोरंजन मोहन्ती, कंटेम्प्रेरी इंडियन पोलिटिकल थ्योरी, संस्कृति, नई दिल्ली

मोहन्ती, मनोरंजन. (1975). " कंपेरेटिव पोलिटिकल थ्योरी एंड थर्ड वर्ल्ड सेंसिटिविटी", टीचिंग पॉलिटिक्स, नंम्बर्स. 1 एंड 2

सारटोरी, जियोवान्नी, (1994). "कम्पेर, व्हाई एंड हाऊ", मात्तेइ दोगन एंड अली कज़न्सिगिल (सं0), कम्पेरिंग नेशन्स, कॉन्सेप्ट्स, स्ट्रैटजीज़, ब्लैकवेल, ऑक्सफोर्ड.

थेडा स्कोक्पॉल एंड एम.सामर्स. (1980). "द यूज़ ऑफ कंपेरेटिव हिस्ट्री इन मैक्रो सोशल इनक्वाइरी", कंपेरेटिव स्टडीज़ इन सोसाइटी एंड हिस्ट्री, ग्रंथ 22, अंक 2

वियार्ड, रॉवर्ड जे. (1998). "इज कंपेरेटिव पॉलिटिक्स डेड. रीथिंकिंग द फील्ड इन द पोस्ट-कोल्ड वॉर ईरा", थर्ड वर्ल्ड क्वॉटर्ली, ग्रंथ 19, नं 0 5.

1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1

1) तुलनात्मक सरकार, व्यवस्थित तुलना के तरीकों के माध्यम से विभिन्न सरकारों का अध्ययन है। जबकि, तुलनात्मक राजनीति से विभिन्न सरकारों के पहलुओं का अध्ययन है, सरकारी और गैर-सरकारी भी। दूसरे शब्दों में, तुलनात्मक सरकार का विषय क्षेत्र सरकार के अध्ययन तक ही सीमित है, परन्तु तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र की प्रकृति व्यापक है जिसका विस्तार राजनीतिक जीवन के लगभग प्रत्येक पहलू तक है। अतः तुलनात्मक राजनीति का वर्णन अक्सर हर राजनीतिक वस्तु के अध्ययन के रुप में किया जाता है जिसमें राज्य, संस्थाएँ, व्यक्ति, समूह, राजनीतिक दल, हित समूह और सामाजिक आन्दोलन इत्यादि सम्मिलित हैं।

अभ्यास प्रश्न 2

1) नहीं, ये मात्र सरकारों के अध्ययन की एक पद्धति नहीं है, ये कहीं अधिक व्यापक है। तुलनात्मक राजनीति का विषय क्षेत्र अपने में शासन, नीति सूत्रीकरणों, राजनीतिक प्रक्रिया, संस्थाओं और शासन प्रणालियों इत्यादि से जुडे मुद्दों की एक विस्तृत श्रृंखला को सम्मिलित करता है। ये हर राजनीतिक वस्तु का अध्ययन है जिसमें सभी प्रकार की राजनीतिक परिघटनाएँ शामिल हैं - सरकारी और गैर-सरकारी भी।

2) तुलनात्मक राजनीति के विषय-वस्तु, योजना और विषय क्षेत्र का विकास विभिन्न ऐतिहासिक युगों में, उस समय के बदलते हुए सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ के अनुसार होता रहा है। तुलनात्मक राजनीति के उद्भव और विकास को भौगोलिक स्थल के रुप में ही नहीं बल्कि विचारों और सिद्धांतों की दृष्टि से देखा जा सकता है। इतिहास के विभिन्न युगों के दौरान तुलनात्मक राजनीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं।

अभ्यास प्रश्न 3

1) राजनीति शास्त्र के अध्ययन में राजनीति का तुलनात्मक अध्ययन अनेक कारणों से उपयोगी है। तुलना के माध्यम से, दो या अधिक राजनीतिक प्रणालियों की विभिन्न राजनीतिक प्रक्रियाओं, संस्थाओं और परिघटनाओं के बीच भिन्नताओं और समानताओं की पहचान और व्याख्या की जा सकती है। ये दो या अधिक राजनीतिक प्रणालियों की विभिन्न राजनीतिक प्रक्रियाओं, संस्थाओं और परिघटनाओं के संबंध में हमारी समझ को गहन करने में भी मदद करती है। एक विस्तृत दृष्टिकोण से तुलनात्मक राजनीति, विभिन्न राजनीतिक प्रणालियों के बारे में हमारी विवेकबुद्धि और सोच का हिस्सा है और सिद्धांतों के निर्माण, विभिन्न राजनीतिक मुद्दों, समस्याओं या परिघटनाओं के वैज्ञानिक विश्लेषण में हमारी सहायता करती है।

2) राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन की प्रकृति और विषय -क्षेत्र का निर्धारण उसकी विशिष्ट विषय -वस्तु, भाषा, शब्दावली द्वारा होती है और उसके परिप्रेक्ष्यों का संबंध राजनीति शास्त्र के विषय से है जैसे लोकतंत्र, संस्थाएँ, चुनाव, संविधान, राजनीतिक दल, शक्ति का वितरण इत्यादि।

3) एक स्पष्ट-परिभाषित और व्यवस्थित अध्ययन के रुप में तुलनात्मक राजनीति की उत्पत्ति उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध और बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में हुई। परन्तु द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व, यह अत्यधिक 'यूरोकेंद्रित' थी, अर्थात्, ब्रिटेन, जर्मनी और फ्राँस इत्यादि जैसे यूरोपीय देशों के अध्ययन तक सीमित। परन्तु द्वितीय विश्व युद्धोत्तर काल में नवोदित राज्यों की उत्पत्ति के साथ विद्वानों ने विश्व के अन्य भागों की राजनीतिक प्रणालियों का अध्ययन प्रारंभ किया। 1990 के दशक में वैश्वीकरण के कारण राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन के विषय-क्षेत्र और ज्ञान-क्षेत्र में कमाल का विस्तार हुआ।

इकाई 2 तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण की विधियाँ *

संरचना

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना: तुलना क्या है

2.2 पद्धति पर कुछ विचार

2.3 तुलनात्मक पद्धति: तुलना क्यों ?

- 2.3.1 सामाजिक-वैज्ञानिक अनुसंधान
- 2.3.2 समाकलनात्मक चिंतन

2.4 तुलना की पद्धतियाँ

- 2.4.1 प्रयोगात्मक पद्धति
- 2.4.2 केस स्टडी
- 2.4.3 सांख्यिकीय पद्धति
- 2.4.4 ध्यान-केंद्रित तुलनाएँ
- 2.4.5 ऐतिहासिक पद्धति

2.5 सारांश

2.6 मुख्य शब्द

2.7 संदर्भ

2.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

हम सब के लिए तुलना एक परिचित अभ्यास है। हमारे दैनिक जीवन के अधिकांश निर्णयों में, चाहे विक्रेता से फल और सब्ज़ियाँ खरीदना हो या एक पुस्तक या एक उपयुक्त महाविद्यालय और कैरियार का चयन करना हो, तुलना करना शामिल है। परन्तु, जब तुलना का प्रयोग सामाजिक और राजनीतिक परिघटनाओं के अध्ययन के लिए किया जाता है, तो 'पद्धति' के रुप में 'तुलना' में कुछ ऐसा होना चाहिए जो उसे, उस लक्ष्य के लिए, अन्य पद्धतियों से अधिक उपयुक्त बनाती है। इस उपयुक्तता का मूल्यांकन करने के लिए हमें सबसे पहले यह जानने की आवश्यकता है कि तुलनात्मक पद्धति क्या है और इसे अन्य पद्धतियों से कैसे अलग किया जा सकता है, जिनमें से कुछ तुलना भी करते है उदाहरण के लिए, प्रयोगात्मक और सांख्यिकीय पद्धतियाँ। हमें तुलनात्मक पद्धति का ही प्रयोग क्यों करना चाहिए। इसे ध्यान में रखना भी महत्वपूर्ण है कि तुलना कैसे की जानी चाहिए या

* प्रो. अनुपमा रॉय, राजनीति अध्ययन केन्द्र, जे. एन. यू. दिल्ली। यह इकाई EPS -09: तुलनात्मक सरकार और राजनीति, से ली गई है।

तुलना के लिए रणनीतियों की योजना कैसे बनाई जानी चाहिए। इस इकाई में हम इन मुद्दों की चर्चा करेंगे।

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्नलिखित की व्याख्या में सक्षम होंगे:

- तुलनात्मक पद्धति और अन्य पद्धतियों से वह किस प्रकार से भिन्न है;
- अन्य पद्धतियों के मुकाबले में तुलनात्मक पद्धति के सापेक्ष लाभ और असुविधाएँ;
- तुलना की विभिन्न पद्धतियाँ;
- किस प्रकार तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग सामाजिक और राजनीतिक परिघटनाओं की व्याख्या में किया जाता है;
- तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र में तुलनात्मक पद्धति के महत्व की व्याख्या।

2.1 प्रस्तावना

पिछले भाग में हमने देखा कि किस प्रकार तुलनाएँ हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा हैं। परन्तु हममें से कोई भी एक शून्यस्थान में नहीं जीता। हमारे दैनिक जीवन को असंख्य अन्य जीवन आडे-तिरछे काटते हैं। हमारे परिवेश के बारे में हमारे अपने अनुभव और पर्यवेक्षण, दूसरों के अनुभव और पर्यवेक्षण द्वारा कई तरीकों से निर्मित और प्रभावित होते हैं। दूसरे शब्दों में, हमारे द्वारा समीप के विश्व का पर्यवेक्षण यह दर्शाएगा कि लोग और घटनाएँ, संबंधो के एक जालतंत्र में जुडे हुए हैं। ये संबंध घनिष्ट या भावनात्मक रुप से जुडे हो सकते हैं, जैसे, एक परिवार के भीतर या हमारे दैनिक जीवन के दौरान जैसे जालतंत्र का विस्तार होता है, तो व्यावसायिक (जैसे हमारे कार्य के स्थल पर) या अव्यक्तिगत (जैसे हम जिस बस में यात्रा करते हैं, उसमें हमारे सह-यात्रियों के साथ)। परन्तु ये संबंध या अंतर्संयोजनात्मकता, एक नियमितता, एक प्रतिमान या एक दैनिकता को दर्शा सकते हैं, उदाहरण के लिए, बस का दैनिक मार्ग, उसके प्रस्थान और आगमन के समय इत्यादि। यहाँ उद्देश्य ये दर्शाना है कि हालांकि प्रत्येक व्यक्ति को एक विशिष्ट दिनचर्या को अपनाते हुए देखा जा सकता है, वहीं समानान्तर रुप से, एक संचय या समुद्रित प्रभाव है, जहाँ ऐसे अनेक व्यक्तियों को इससे मिलती.जुलती दिनचर्या को अपनाते हुए देखा जा सकता है। हम ये कह सकते हैं कि इन व्यक्तियों के जीवन में नियमितता का एक प्रतिमान है, जो उनकी समानता की दृष्टि से तुलनीय है। अब, अगर समानताओं को संयोजित किया जा सकता है, तो अनियमितताओं या विषमताओं को भी आसानी से पहचाना जा सकता है। उनके जीवन की परिस्थितियों में समानताओं और विभिन्नताओं की छान-बीन करने के बाद समानताओं और विषमताओं, दोनों की व्याख्याएँ की जा सकती हैं। इसे उदाहरण द्वारा स्पष्ट करने के लिए, आइए हम एक आवासीय कॉलोनी की कल्पना करें जिसके अधिकांश पुरुष निवासी प्रातः 8 बजे एक चार्टर्ड बस में काम पर जाते हैं और शाम 6 बजे लौटते हैं। कुछ निवासी सुबह 9 बजे अपनी कार से जाते है और शाम 5 बजे लौटते हैं। इस प्रकार मोटे तौर पर, कॉलोनी के निवासियों के दो समूह हैं जो व्यवहार के दो प्रकार के प्रतिमानों का प्रदर्शन करते हैं। प्रत्येक समूह के भीतर समानताओं और दोनों समूहों के बीच विषमताओं, इन दोनों के लिए व्याख्याएँ पाई जा सकती हैं। जबकि स्थितियों की समानताओं में समरुपता के लिए व्याख्याएँ मिलती हैं, समूहों के बीच

अनियमितता या विषमताओं की व्याख्याएँ उन परिस्थितियों की अनुपस्थिति के रुप में की जा सकती हैं जो एक समूह में समानता की अनुमति देती हैं, उदाहरण के लिए, ये पाया जा सकता है कि व्यक्ति बस से यात्रा करते हैं, उनके बीच चार्टर्ड बस में अपने दफ्तरों को जाने के अलावा और भी कई सामान्य बातें हैं, जैसे, एक ही दफ्तर में कार्य, निजी वाहनों का अभाव, दफ्तर में लगभग एक जैसे पद/ओहदा, एक ही मार्ग पर दफ्तरों का ठिकाना इत्यादि। जो अपनी कारों से यात्रा करते हैं, वे भी अपने समूह के अन्दर स्थितियों की समानताओं का प्रदर्शन करेंगे। समूहों के बीच भिन्न प्रतिमानों की व्याख्या, उन परिस्थितियों की अनुपस्थिति के रुप में की जा सकती है जो दो समूहों में समानताओ की अनुमति देती हैं, उदाहरण के लिए, कार समूह वाले निवासी भिन्न दफ्तरों को जा रहे होंगे जो उसी बस मार्ग पर नहीं आते । वे एकमात्र लोग हो सकते हैं जिनके पास कारें हैं, उनके दफ्तरों में उनका और ऊँचा ओहदा हो सकता है, इत्यादि। व्याख्याएँ अनेक हो सकती हैं और अनेक अन्य चरों पर आधारित भी, जैसे जाति, लिंग, राजनीतिक विचार इत्यादि। समानताओं और विषमताओं के इस पर्यवेक्षण के आधार पर एक कारणात्मक संबंध के रुप में प्रस्ताव रखे जा सकते हैं, उदाहरण के लिए, वाहन चलाकर काम पर जाने वाले पुरुष/महिलाएँ ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि उनके कार्य के स्थान के लिए चार्टर्ड बसें नहीं जाती है । अथवा निजी वाहनों के मालिक (महिला या पुरुष) अपने आफिस, अपने वाहन में जायेंगे और इस बात की संभावना ज्यादा है उन लोगो की तुलना में जिनके पास वाहन नहीं है, उच्चवर्गीय महिलाओं की अपने कार्यस्थान तक वाहन चलाकर जाने की संभावना अधिक है इत्यादि। आइए, इस अतिसरलीकृत उदाहरण से उन जटिल तरीकों की ओर बढें जिनमें समाजशास्त्री तुलनाओं का प्रयोग करते हैं।

2.2 पद्धति पर कुछ विचार

तुलनात्मक पद्धति का अध्ययन करने से पहले, आइए हम ये देखें कि यथार्थ में एक 'पद्धति' क्या है और उसे क्यों इतना महत्वपूर्ण माना जाता है। जैसा कि हमें अपने अनुभवों से पता है कि पद्धति किसी वस्तु को सहजता से निष्पादित करने का एक उपयोगी, सहायक और शिक्षाप्रद तरीका है। उदाहरण के लिए, सिमटने वाले फर्नीचर का एक हिस्सा, एक निर्देशक पुस्तिका के साथ आता है जो उसे खड़ा करने के लिए विभिन्न कदमों के माध्यम से हमारा मार्गदर्शन करती है। इसी प्रकार एक परिघटना का अध्ययन करते समय पद्धति कार्य को करने के तौर.तरीकों की ओर इशारा करेगी। परन्तु, सिमटने वाले फर्नीचर के हमारे उदाहरण की तरह न होकर, हमें संभवतः आरंभ में ही अपने अन्वेषण के अंतिम स्वरुप या परिणामों के बारे में जानकारी नहीं मिल सकती। हमारे पास शायद अंतिम परिणाम की ओर हमारा मार्गदर्शन करने वाली एक परिशुद्ध निर्देशक पुस्तिका भी न हो। हमारे पास केवल फर्नीचर के हिस्से और उसे खड़ा करने के लिए औज़ार होंगे। दूसरे शब्दों में, "अवधारणाएँ" और "तकनीक"। इन अवधारणाओं (विचार, चिंतन, और धारणाएँ) और तकनीकों (डेटा/आँकडे एकत्रित करने के तरीके) का एक निश्चित परिघटना के बारे में अधिक जानकारी, समझ या व्याख्या के लिए, विशिष्ट तरीकों से प्रयोग करना होगा। इस प्रकार, ये कहा जा सकता है कि डेटा/आंकडों के संबंध में विशिष्ट अवधारणाओं के प्रयोग करने के तरीकों का संगठन ही 'पद्धति' है। निःस्संदेह, स्वयं डेटा/आंकडों को

एकत्रित करने की रीति को तैयार करना होगा। जिन अवधारणाओं को कार्यान्वित या जिनका अध्ययन करना है, उनके बारे में विचार करना होगा। अंत में, इन सबको संगठित करना होगा ताकि डेटा/आंकडों की प्रकृति और जिस तरीके से उसे एकत्रित किया जाता है और अवधारणा को प्रयोग में लाना इस प्रकार हो कि हम जिसका अध्ययन करना चाहते हैं, उसका अध्ययन परिशुद्धता के एक स्तर के साथ कर पायें। एक वैज्ञानिक अन्वेषण में पद्धति की परिशुद्धता और यथार्थता पर काफी बल दिया जाता है। परन्तु, अपनी विषय वस्तु की प्रकृति के कारण, समाजशास्त्रों को ऐसी पद्धतियों के बारे में सोचना पडता है जो प्रयोगशालाओं या अन्य नियंत्रित स्थितियों में हो रहे वैज्ञानिक परीक्षणों की परिशुद्धता के निकट आते हैं। फिर भी अनेक विद्वान ये अनुभव नहीं करते कि तथाकथित "वैज्ञानिक अनुसंधान" के बारे में इतनी पूर्वव्यस्तता होनी चाहिए। इस विषय के बारे में विद्वानों के जो भी विचार हों, सभी अध्ययनों में चिंतन, अन्वेषण और अनुसंधान में फिर भी एक 'पद्धति' होती है। अपने अध्ययन के लिए विद्वानों द्वारा अनेक पद्धतियों.तुलनात्मक, ऐतिहासिक, प्रयोगात्मक, सांख्यिकीय इत्यादि.का प्रयोग किया जाता है। ये कहा जा सकता है कि ये सभी पद्धतियाँ विभिन्न मात्राओं में तुलनाओं का प्रयोग कर सकती हैं क्योंकि तुलनात्मक पद्धति पर तुलनात्मक राजनीति का एकाधिकार नहीं है। इसका प्रयोग ज्ञान के सभी क्षेत्रों में भौतिक, मानवीय और सामाजिक परिघटना के अध्ययन के लिए किया जाता है। समाजशास्त्र, इतिहास, मानव विज्ञान, मनोविज्ञान, साहित्य इत्यादि, इसका प्रयोग समान विश्वास के साथ करते हैं। इन विषयों ने तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग उन अध्ययनों को उत्पन्न करने के लिए किया है जिनका उल्लेख विभिन्न प्रकार से "पार.सांस्कृतिक" (जैसा कि मानव विज्ञान और मनोविज्ञान में) और "पार.राष्ट्रीय" (जैसे कि राजनीति शास्त्र और समाजशास्त्र में) के रुप में किया जाता है, जो विभिन्न क्षेत्रों पर बल देते हैं।

अभ्यास प्रश्न 1

नोट: i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।
ii) इकाई के अन्त में अपने उत्तर के लिए संकेतों को देखें।

1) पद्धति क्या है? आपके विचार में पद्धति अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा क्यों है?

.....

.....

.....

2.3 तुलनात्मक पद्धति: तुलना क्यों ?

2.3.1 सामाजिक-वैज्ञानिक अनुसंधान

तुलनात्मक पद्धति को, एक "भूमिगत सिद्धांत" को विकसित करने, परिकल्पनाओं के परीक्षण, कारण कार्य संबंधों का अनुमान लगाने और विश्वसनीय सामान्यीकरणों को उत्पन्न करने के आधार के रुप में समानताओं और विषमताओं के अध्ययन के रुप में देखा गया। अनेक सामाजिक वैज्ञानिकों का

मानना है कि अनुसंधान वैज्ञानिक रुप से संगठित होना चाहिए। वे मानते हैं कि तुलनात्मक पद्धति उन्हें "वैज्ञानिक" अनुसंधान के संचालन के लिए सर्वोत्तम साधन प्रदान करती है, अर्थात, अनुसंधान जिसकी विशेषताएँ हैं परिशुद्धता, मान्यता, विश्वसनीयता और सत्यापनीयता और कुछ मात्रा में पूर्वानुमेयता। अमेरिकी राजनीति शास्त्री जेम्स कोलमैन ने, उदाहरण के लिए, अपने विद्यार्थियों को अक्सर याद दिलाया, "आप यदि तुलना नहीं कर रहे तो आप वैज्ञानिक नहीं हो सकते।" इसी प्रकार, स्वॉनसन ने इस बात पर बल दिया कि बिना तुलनाओं के "वैज्ञानिक चिंतन और समस्त वैज्ञानिक अनुसंधान" के बारे में सोचना "अनिवार्य" था (स्वॉनसन, 1971, पृ. 145)।

जबकि भौतिक विज्ञान में तुलनाएँ प्रयोगशालाओं में ध्यानपूर्वक नियंत्रित स्थितियों में की जाती हैं, समाजशास्त्रों में उन स्थितियों में, जो प्रयोगशाला की स्थितियों को दोहरा सकें, परिशुद्ध परीक्षण संभव नहीं है। उदाहरण के लिए, यदि एक समाजशास्त्री निर्वाचन प्रणालियों और राजनीतिक दलों की संख्या के बीच संबंध का अध्ययन करना चाहे तो वह अपनी निर्वाचन प्रणाली को बदलने का निर्देश दे सकता है और न ही जनता को एक निश्चित तरीके से व्यवहार करने का आदेश दे सकता है। और न ही एक सामाजिक या राजनीतिक परिघटना को एक प्रयोगशाला में दोहरा सकता है जहाँ परीक्षण किए जा सकते हैं। अतः जहाँ एक समाजशास्त्री एक वैज्ञानिक तरीके से कार्य करने के लिए अपने को विवश महसूस कर सकता है, वहीं, जिसे "वैज्ञानिक" अन्वेषण के रुप में स्वीकार किया जाता है, उसे सामाजिक परिघटनाएँ शायद अनुमति न दें। इसके बावजूद वह "मामलों" (केस) का अध्ययन कर सकता है, अर्थात् वास्तव में मौजूद राजनीतिक दलों का, और उनकी तुलना कर सकता है, अर्थात् उनके संबंध के अध्ययन का एक तरीका निकाल कर जैसे कि परिकल्पना में हल किया गया है, निष्कर्ष निकाल कर और सामान्यीकरणों की प्रस्तुति द्वारा।

इस प्रकार, वैज्ञानिक दृष्टि से प्रयोगात्मक पद्धति से कमज़ोर होने के बावजूद, तुलनात्मक पद्धति को एक वैज्ञानिक पद्धति के सबसे निकट माना जाता है, जो सामाजिक परिघटनाओं की व्याख्याएँ खोजने के लिए और सैद्धांतिक प्रस्तावों और सामान्यीकरण प्रस्तुत करने के लिए सर्वश्रेष्ठ संभव अवसर प्रदान करती है। अब आप ये प्रश्न पूछ सकते हैं कि तुलनात्मक पद्धति को क्या खासियत वैज्ञानिक बनाती है। सारटोरी ने दावा किया कि "नियंत्रण प्रकार्य" या जाँच की प्रणाली, जो वैज्ञानिक अनुसंधान का अभिन्न हिस्सा है, और प्रयोगशाला प्रयोग का अनिवार्य अंग, समाजशास्त्रों में उसे केवल तुलनाओं के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। आगे बढते हुए उसका यह प्रस्ताव है कि चूंकि "नियंत्रण प्रकार्य" का प्रयोग केवल तुलनात्मक पद्धति के माध्यम से हो सकता है, समाजशास्त्रों में तुलनाएँ अपरिहार्य हैं। अपने नियंत्रणकारी/सैद्धांतिक प्रस्तावों को बनाने या भविष्यवाणियाँ करने वाली निश्चित परिघटनाओं की व्याख्या करने वाले सैद्धांतिक कथनों के लिए तुलनाओं का वैज्ञानिक महत्व है। और उसके लिए भी जिसे वह "दूसरों के अनुभव से सीखना" कहता है। इस संदर्भ में यह बताना महत्वपूर्ण है कि तुलनात्मक पद्धति में भविष्यवाणियों की प्रकृति का एक संभाग्य कारण.कार्य संबंध है। इसका अर्थ ये है कि ये अपने परिणामों को केवल संभावनाओं या संभावयताओं के रुप में अभिव्यक्त कर सकते हैं, अर्थात् स्थितियों के एक निश्चित समुच्चय द्वारा एक प्रत्याशित परिणाम दिया जाना

संभव है। ये वैज्ञानिक अनुसंधान में निर्धारक कारण.कार्य संबंध से भिन्न है जो निश्चितता पर बल देता है अर्थात् स्थितियों का एक निश्चित समुच्चय प्रत्याशित परिणाम अवश्य उत्पन्न करेगा।

2.3.2 समाकलनात्मक चिंतन

जबकि कुछ सामाजिक वैज्ञानिक एक वैज्ञानिक अन्वेषण के विकास के लिए तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग करते हैं, कुछ अन्य के लिए, तुलनाओं के साथ चिंतन विशिष्ट सामाजिक और राजनीतिक परिघटना के विश्लेषण का एक अभिन्न हिस्सा है। स्वॉनसन, जिसने यह दावा किया है कि "तुलनाओं के बिना चिंतन कल्पनातित है", इस उपागम का प्रतिनिधि है। उसके अनुसार, "किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि तुलनाएँ, अंतर्निहित और सुव्यक्त, सामाजिक वैज्ञानिकों के कार्य में व्याप्त होती हैं और आरंभ से ऐसा करती आई हैं: भूमिकाओं, संगठनों, समुदायों, संस्थाओं, समाजों और संस्कृतियों में तुलनाएँ" (स्वॉनसन, 1971, पृ0 145)। प्रसिद्ध जर्मन समाजशास्त्री, एमिल दुर्खीम भी पुष्टि करता है कि तुलनात्मक पद्धति अनुसंधान (समाजशास्त्री) को केवल वर्णनात्मक रहने से रोकने में सक्षम बनाती हैं (दुर्खीम, 1984, पृ0 139)। स्मेलसर ने भी दावा किया कि बिना तुलनाओं के वर्णन काम नहीं आते। वह प्रमाण देता है कि "साधन रुप से आबाद" और "लोकतांत्रिक" जैसे सरल वर्णनात्मक शब्द, स्थितियों के एक ऐसे जगत की पूर्वकल्पना करते हैं जो अधिक या कम आबाद हैं या अधिक या कम लोकतांत्रिक हैं और एक स्थिति का बयान/वर्णन केवल दूसरी के संबंध/तुलना में किया जा सकता है (स्मेलसर, 1976: 3)। अनेक विद्वानों का यह मानना है कि इस प्रकार की "एक जगत की परिकल्पना" जिसमें संबंधों के एक समुच्चय (सेट) के अन्तर्गत एक वर्णनात्मक वर्ग को रखा जा सकता है, उसका बेहतर विश्लेषण करने में हमारी मदद करती है। अतः मनोरंजन मोहन्ती, परिघटनाओं में केवल समानताओं और विषमताओं को न देखते हुए, संबंधों पर बल डालने का प्रयास करता है। अवरोक्त या उसके शब्दों में "तुलना और व्यक्तिरेक उपागम" (तुलना करना और अंतर बनाना उपागम) अंततः " द्वि भागीकरण में एक अभ्यास, ध्रुवित करने के लिए एक क्रिया" बन कर रह जाएगा। दूसरे शब्दों में, ऐसा अभ्यास प्रतिरुपों का वर्गीकरण एकाकी कक्षों के समूहों में करेगा, जिसके फलस्वरुप, एक तुलनात्मक अभ्यास केवल समूहों के अन्दर समानताओं और उनके बीच विषमताओं का पता लगाना मात्र बन जाएगा। एकता और विरोध के संबंधों की पहचान करने के लिए हमें अपने प्रश्नों को बदलना होगा। इसका अर्थ ये होगा कि पूछे गए प्रश्न ऐसे नहीं होने चाहिए कि उनके उत्तर केवल समानताओं और विषमताओं को ही नहीं बल्कि" उनके बीच जो संबंध है " उसे भी स्थापित करें। केवल तभी जाकर संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन जैसी राजनीतिक प्रणालियों की तुलनात्मकता को समझा जा सकता है, जो उदाहरण के लिए, अपनी सरकारों के स्वरुप की दृष्टि से भिन्न हैं (क्रमशः, अध्याक्षत्मक और संसदीय स्वरुप)।

केवल समानता और विषमता के संकेत कों को ही न देखते हुए, संबंधों को देखने की आवश्यकता का भी दावा स्मेलसर ने किया है। स्मेलसर का मानना है कि अक्सर एक तुलनात्मक अभ्यास केवल भिन्नताओं या विषमताओं के कारणों को खोजता रह जाता है और ऐसी व्याख्याएँ प्रस्तुत करता है जो अक्सर "विकृतियाँ" होती हैं। "नवीन" और "अद्वितीय" के साथ दूसरे शब्दों में, वह जो दूसरों से भिन्न या अलग दिखता है, आकर्षण या तन्मयता मानव प्रकृति का हिस्सा हमेशा रही है। ऐतिहासिक दृष्टि

से, एक ऐसी प्रवृत्ति रही है जो या तो एक पूववर्ती युग के 'शुद्ध' अवशेषों के रुप में इन भिन्नताओं की प्रशंसा करती है अथवा जिसे सामान्य व्यवहार माना जाता है, उसके विचलनों के रुप में देखती है। इस प्रकार समानताओं और भिन्नताओं पर बल दिए जाने के परिणामस्वरुप समानताओं या एकरुपताओं को मानकों के रुप में और विषमताओं और रुपांतरों को मानक के 'विचलन' के रुप में देखे जाने की संभावना हो सकती है। ऐसे विचलनों के लिए प्रस्तुत की गई व्याख्याएँ केवल 'विकृतियाँ' नहीं हो सकती बल्कि अक्सर द्विचर प्रतियोगों, पदानुक्रमों या यहाँ तक कि आदर्श (अच्छा) और विपथगमी (बुरा) के रुप में वर्गीकरणों या वर्गों के श्रेणीकरणों का कारण बनती हैं। असमान संबंधों की एक प्रणाली में भिन्नताओं और उनके कारणों के आरोपण का परिणाम अक्सर भिन्न समझे जाने वाले समूहों को अधिकारों से वंचित करना होता है। हमने उपनिवेशवाद के इतिहास में देखा है कि उपनिवेशों की जनता को स्वतंत्रता और स्व.शासन के अधिकार से वंचित किया गया था। उपनिवेशवादी राष्ट्र ने इस वंचन को न्यायसंगत ठहराने के लिए पराधीन जनसंख्या को स्व.शासन के लिए असमर्थ बनाया क्योंकि उसकी सामाजिक संरचनाएँ और धार्मिक विश्वास भिन्न थे। भिन्न की स्थिति का निरुपण यहाँ शक्ति के प्रेक्षण स्थल (नज़रिए) से आया, उपनिवेशवादी राष्ट्रों के नज़रिए से। ऐसी स्थितियों में द्विचर प्रतियोग, जैसे पश्चिम और पूर्व, ऐसे राष्ट्रों या लोगों की ओर इशारा कर सकते हैं जिनका वर्णन न केवल भिन्न विशेषताओं (गुणों) से युक्त लोगों के रुप में किया जाता है बल्कि समय की दृष्टि से भी जिनके पृथक अस्तित्व हैं। इस प्रकार, जहाँ एक ओर, उपनिवेशवादी ब्रिटिश को आधुनिकीकरण की एक अवस्था तक पहुचें हुओं के रुप में देखा जा रहा था, वहीं पराधीन भारतीयों को समयहीनता की एक स्थिति में रहते हुए देखा जाता था, दूसरे शब्दों में, एक पिछडे हुए अतीत में कैद। फिर भी, ऐतिहासिक दृष्टि से, हम एक ऐसे विश्व में रहे हैं, जिसकी विशेषता एरिक वुल्फ के शब्दों में अंतः संबंध है। इस प्रकार, संबंधों की खोज करने के आग्रह को एरिक वुल्फ द्वारा महत्व दिया जाता है, जिसकी कृति, इस धारणा का सुधार करती है कि राष्ट्रों ने किया है जबकि अन्य राष्ट्र केवल मौन दर्शक थे। वुल्फ यह दर्शाता है कि ऐतिहासिक दृष्टि से अंतः संबंध राज्यों और राष्ट्रों के जीवन का तथ्य रहे हैं और अब भी कायम हैं (वुल्फ, 1982)। इसका अर्थ ये है कि संबंध को खोजना न केवल संभव है बल्कि ऐसे अतःसंबंधों की अवहेलना करना वास्तव में, ऐतिहासिक दृष्टि से, अमान्य होगा।

अभ्यास प्रश्न 2

नोट: i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) इकाई के अन्त में अपने उत्तर के लिए संकेतों को देखें।

1) सामाजिक-वैज्ञानिक अनुसंधान के उद्देश्यों की पूर्ति में तुलनाएँ कैसे सहायता करती हैं?

.....

.....

.....

.....

2.4 तुलना की पद्धतियाँ

राजनीति शास्त्र के अध्ययन में, विद्वानों ने अनेक प्रकार की तुलनात्मक पद्धतियों का प्रयोग किया है। व्यापक रुप से प्रयोग की जाने वाली तुलना की कुछ पद्धतियाँ निम्न प्रकार से है:

2.4.1 प्रयोगात्मक पद्धति

यद्यपि प्रयोगात्मक पद्धति का समाजशास्त्रों में सीमित उपयोग है, फिर भी ये वो मॉडल या प्रतिमान उपलब्ध करती है जिस प्रकार अनेक तुलनावादी अपने अध्ययनों को आधारित करने की अभिलाषा करते हैं। सरल शब्दों में, प्रयोगात्मक पद्धति दो स्थितियों के बीच एक कारणात्मक संबंध स्थापित करना चाहती है। दूसरे शब्दों में, परीक्षण का लक्ष्य यह सिद्ध करना है कि एक स्थिति दूसरी स्थिति को उत्पन्न करती है या दूसरी स्थिति को एक निश्चित तरीके से प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए, यदि कोई इसका अध्ययन/व्याख्या करना चाहे कि एक विशाल.समूह समायोजन में, बच्चों में, अंग्रेजी में उनकी अभिव्यक्ति की योग्यता की दृष्टि से अंतर क्यों है, तो अनेक कारकों को इस क्षमता को प्रभावित करते हुए देखा जा सकता है, अर्थात् सामाजिक पृष्ठभूमि, भाषा में निपुणता, परिवेश से सुपरिचय इत्यादि। अन्वेषक इन सभी कारकों के प्रभाव का अध्ययन कर सकता है या इनमें से किसी एक का या कारकों के एक सम्मिश्रण का भी। वह फिर उन स्थितियों/कारकों को अलग करता है जिनके प्रभाव का वह अध्ययन करना चाहता है और इसके परिणामस्वरुप प्रत्येक स्थिति की भूमिका को सुनिश्चित करता है। जिस स्थिति के प्रभाव को मापना है और जो अन्वेषक द्वारा संचालित किया जाता है, वह स्वतंत्र चर है, उदाहरण के लिए, सामाजिक पृष्ठभूमि इत्यादि। वह स्थिति, जिस पर प्रभाव का अध्ययन किया जाना है, वह इस प्रकार, आश्रित चर है। अतः अभिव्यक्ति की योग्यता पर सामाजिक पृष्ठभूमि के प्रभाव के अध्ययन के लिए रुपांकित एक प्रयोग में, सामाजिक पृष्ठभूमि स्वतंत्र चर होगा और अभिव्यक्ति की योग्यता आश्रित चर। अन्वेषक एक परिकल्पना तैयार करता है जिसे दो स्थितियों के बीच संबंध के रुप में वर्णित किया जाता है जिसका परीक्षण उस प्रयोग में किया जाता है, अर्थात् उच्चतर सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चे विशाल.समूह समायोजना में अंग्रेजी में अभिव्यक्ति की बेहतर योग्यता का प्रदर्शन करते हैं। प्रयोग के परिणाम अन्वेषक को अपने निष्कर्षों की व्यावहारिता के संबंध में सामान्य प्रस्ताव प्रस्तुत करने में और अन्य पूर्व अध्ययनों से उनकी तुलना करने में सक्षम बनाएँगे।

2.4.2 केस स्टडी

एक केस स्टडी, जैसा कि इसका नाम संकेत देता है, एक एकल केस (मामले) के गहराई से अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करती है। इस अर्थ में, जबकि पद्धति अपने आप में पूरी तरह से तुलनात्मक नहीं है, यह डेटा (आंकडे) उपलब्ध करती है (एकल केस या मामलों पर) जो सामान्य पर्यवेक्षणों का आधार बन सकता है। इन पर्यवेक्षणों का प्रयोग, अन्य 'केस' के साथ तुलना करने के लिए और सामान्य व्याख्याएँ प्रस्तुत करने के लिए, किया जा सकता है। केस स्टडीज़ फिर भी, एक असंगत तरीके से 'विशिष्टता' या जिन्हे 'विपथगामी' कहा जाता है, या असामान्य केस उन पर बल दे सकता है। उदाहरण के लिए, तुलनावादियों में ये प्रवृति हो सकती है कि ऐसे प्रश्नों का अनुसंधान करें कि संयुक्त राज्य अमेरिका

में एक समाजवादी दल क्यों नहीं है बजाय इसके कि अधिकांश पश्चिमी लोकतंत्रों सहित, स्वीडन में यह दल क्यों है। अलेक्स-डी-टॉकविल के शास्त्रीय अध्ययनों, 18 वीं शताब्दी के फ्राँस (द ओल्ड रेजीम एंड द फ्रेंच रेवल्यूशन, 1856) और 19 वीं शताब्दी के संयुक्त राज्य अमेरिका (डेमॉक्रेसी इन अमेरिका खंड 1, 1835) का हम संक्षेप में अध्ययन करेंगे, ये दर्शाने के लिए कि एकल केस पर केंद्रण द्वारा तुलनात्मक व्याख्याएँ कैसे हो सकती हैं। उसके दोनों अध्ययन भिन्न प्रश्न पूछते हुए प्रतीत होते हैं। फ्राँस के संदर्भ में, वह ये स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि 1789 की फ्रेंच क्रांति क्यों हुई और संयुक्त राज्य अमेरिका के संदर्भ में, वह वहाँ सामाजिक समानता की स्थितियों के कारणों और परिणामों पर ध्यान देता हुआ दिखाई देता है। यद्यपि इन दोनों कृतियों के बीच विषय की आधारभूत एकता है। यह एकता, आंशिक रुप से दोनों में, मिलते. जुलते वैचारिक मुद्दों में टॉकविल की पूर्वव्यस्तता के कारण है, अर्थात् समानता और असमानता तानाशाही और स्वतंत्रता तथा राजनीतिक स्थिरता और अस्थिरता और सामाजिक संरचना तथा सामाजिक परिवर्तन पर उसके विचार। साथ ही, दोनों अध्ययनों की बुनियाद में कुलीनतंत्र और लोकतंत्र, असमानता से समानता की ओर पश्चिमी ऐतिहासिक संक्रमण की निष्ठुरता के संबंध में उसका दृढ़ विश्वास भी है। अन्ततः यह तथ्य है कि इन दोनों अध्ययनों में दूसरा राष्ट्र एक 'अनुपस्थित' केस या प्रतीक निर्देश्य के रुप में कायम रहता है, और यही इन व्यक्तिगत कृतियों को तुलनात्मक बनाते हैं और कुछ लोगों के अनुसार, एक एकल तुलनात्मक अध्ययन बनाते हैं। इस प्रकार, अमेरिकी समाज का उसके द्वारा विश्लेषण, फ्रेंच समाज पर उसके परिप्रेक्ष्य द्वारा प्रभावित हुआ और यही विपरीत क्रम से भी हुआ। अमेरिकी केस को 'जन्म से लोकतंत्र' के एक 'शुद्ध' केस के रुप में देखा गया, जहाँ समानता की दिशा में सामाजिक विकासक्रम 'लगभग अपनी प्राकृतिक सीमाओं' तक पहुँच चुका था, जिसके फलस्वरुप राजनीतिक स्थिरता, उसके विशाल मध्य वर्ग में सापेक्ष वंचन की भावना की क्षीणता और परिवर्तन के प्रति एक रूढिवादी दृष्टिकोण की स्थिति उत्पन्न हुई। फ्रेंच केस एक कुलीनतंत्र था (पदानुक्रमिक असमानताओं की एक प्रणाली) जिसने 18 वीं शताब्दी में एक संक्रमण की अवस्था में प्रवेश किया था, जिसमें असमानता के साथ समानता की अपेक्षाओं और इच्छा के मिश्रण की स्थितियाँ थी, जो कुलीनतंत्र और समानता के दो सिद्धांतों के अस्थिर मिश्रण में परिणत हुई, जो तानाशाही की ओर ले गई और जिसका समापन 1789 की क्राँति में हुआ। इस प्रकार, टॉकविल की व्यक्तिगत केस की अद्वितीय केस-स्टडी वास्तव में फ्राँस और संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा अपनाए गए विभिन्न ऐतिहासिक मार्गों की व्याख्या करने के लिए ऐतिहासिक बलों की परस्पर क्रिया के एक जटिल प्रतिमान (मॉडल) के अन्तर्गत राष्ट्रीय विषमताओं और समानताओं का अध्ययन था।

2.4.3 सांख्यिकीय पद्धति

सांख्यिकीय पद्धति वर्गों और चरों का प्रयोग करती है जो मात्रात्मक हैं या जिनका प्रतिनिधित्व अंको/संख्या द्वारा किया जा सकता है, उदाहरण के लिए, मतदान प्रतिमान, सार्वजनिक व्यय, राजनीतिक दल, कुल मतदान, शहरीकरण, जनसंख्या आदि । यह समानान्तर रुप से अनेक चरों के प्रभावों संबंधों के अध्ययन के लिए अद्वितीय अवसर प्रदान करता है। परिशुद्ध डेटा (आंकडों) को एक सुगठित और दृष्टिगत रुप से प्रभावी तरीके से प्रस्तुत करने में यह लाभकारी है जिसके कारण समानताएँ और विषमताएँ संख्यात्मक प्रतिनिधित्व के माध्यम से दृष्टिगोचर होते हैं। यह तथ्य कि

अनेक चरों का अध्ययन एक साथ किया जा सकता है, संबंध की दृष्टि से जटिल व्याख्याओं को खोजने का भी अद्वितीय अवसर प्रदान करता है। सांख्यिकीय पद्धति का प्रयोग दीर्घकालीन प्रवृत्तियों और प्रतिमानों की व्याख्या और तुलना में तथा भावी प्रवृत्तियों के बारे में भविष्यवाणियों को प्रस्तुत करने में भी सहायक है। उदाहरण के लिए, कुल मतदान और आयु.वर्गों की सांख्यिकीय तालिकाओं के विश्लेषण के माध्यम से आयु और राजनीतिक सहभागिता के बीच संबंध का अध्ययन किया जा सकता है। लम्बी अवधियों में इस डेटा (आंकडों) की तुलना, या अन्य देशों/राजनीतिक प्रणालियों में मिलता-जुलता डेटा, या धार्मिक समूहों, सामाजिक वर्ग और आयु की दृष्टि से कुल मतदान को प्रदर्शित करने वाला डेटा, जटिल सामान्यीकरणों के निर्माण में हमारी सहायता कर सकता है । उदाहरण के लिए मध्यवर्गीय हिन्दू, 25 और 30 की आयु के बीच के पुरुष मतदाता सर्वाधिक उत्साही मतदाता हैं। पार-राष्ट्रीय तुलनाएँ ऐसे जाँच परिणाम दे सकती हैं जैसे, 25 से 30 की आयु के बीच की मध्यवर्गीय महिलाओं द्वारा भारत जैसे विकासशील राष्ट्रों की तुलना में, पश्चिमी लोकतंत्रो में मतदान करने की ज्यादा संभावना है । इस पद्वति की उपयोगिता इसकी सापेक्ष सुलभता में है, जिससे यह विभिन्न चरो से निपटती है । परन्तु यह संपूर्ण उत्तरदेने में या पूरी तस्वीर प्रस्तुत करने में असफल हो जाती है। फिर भी, उन संबंधों और उन व्यापक श्रेणियों के बारे में जिनका प्रयोग सांख्यिकीय पद्धति अपने संख्यात्मक प्रतिनिधित्व को सुगम बनाने के लिए प्रयोग करती है, अधिक व्यापक व्याख्याएँ देने के लिए गुणात्मक विश्लेषण के साथ इस पद्धति का प्रयोग किया जा सकता है।

2.4.4 ध्यान-केंद्रित तुलनाएँ

ये अध्ययन राष्ट्रों की एक छोटी संख्या को लेते हैं, अक्सर केवल दो (युग्मित या द्विआधारी तुलनाएँ) और प्रायः इन राष्ट्रों की राजनीति के निश्चित पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, बजाय सभी पहलुओं पर। विभिन्न राष्ट्रों में इस पद्धति के माध्यम से लोकनीतियों का सफलतापूर्वक तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। लिप्सेट दो प्रकार के द्विआधारी या युग्मित तुलनाओं के बीच अंतर बनाता है-निहित और सुस्पष्ट। निहित द्विआधारी तुलना में, अन्वेषक का अपना राष्ट्र, जैसे टॉकविल द्वारा अमेरिका का अध्ययन, संदर्भ का कार्य कर सकता है। सुस्पष्ट युग्मित तुलनाओं में, तुलना के लिए दो स्पष्ट केस (राष्ट्र) होते हैं। इन दो राष्ट्रों का अध्ययन उनके विशिष्ट पहलुओं के संबंध में किया जा सकता है, उदाहरण के लिए, भारत और चीन में जनसंख्या नियंत्रण की नीति या दोनों देशों की संपूर्णता में, उदाहरण के लिए, आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के संबंध में। अवरोक्त, (बाद वाला अध्ययन) दो केस के समानान्तर अध्ययन की ओर जा सकता है जिसमें संबंध के अध्ययन के लिए बहुत कम गुंजाइश होगी।

2.4.5 ऐतिहासिक पद्धति

ऐतिहासिक पद्धति को अन्य पद्धतियों से इस प्रकार अलग किया जा सकता है कि वह कारणात्मक या कारण संबंधी व्याख्याओं को खोजता है जो ऐतिहासिक दृष्टि से संवेदनशील होते हैं। एरिक वुल्फ इस बात पर बल देता है कि कोई भी अध्ययन जो समाजों और मानवीय क्रिया के कारणों को समझने का प्रयास करता है, वह केवल समस्याओं के तकनीकी हल जो तकनीकी शब्दावली में प्रस्तुत किए जाने हों, उनकी खोज नहीं कर सकता। महत्व की बात ये थी कि एक विश्लेषणात्मक इतिहास का

प्रयोग किया जाए जो वर्तमान के कारणों को अतीत में खोजता हो। ऐसा विश्लेषणात्मक इतिहास, समय की एक अवधि में, एक एकल संस्कृति या राष्ट्र, एक एकल संस्कृति क्षेत्र या यहाँ तक कि एक एकल महाद्वीप के अध्ययन से विकसित नहीं किया जा सकता था, बल्कि मानव जनसंख्याओं ओर संस्कृतियों के बीच संपर्क परस्पर क्रियाओं और परस्पर संबंधों के अध्ययन से संभव था।

ऐतिहासिक अध्ययनों ने एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में सामाजिक और राजनीतिक परिघटनाओं की कारणात्मक व्याख्याओं को ढूँढ़ने के लिए एक या अधिक केस पर ध्यान केंद्रित किया है। एकल केस स्टडीज़ (एकल वृत्त अध्ययन) जैसा कि पिछले खंड में उल्लेख किया गया है, सामान्य वक्तव्य उत्पन्न करने का प्रयास करते हैं जिन्हें अन्य केस पर लागू किया जा सकता है। थेडा स्कोक्पॉल ध्यान दिलाती है कि एक से अधिक केस का प्रयोग करने वाले तुलनात्मक ऐतिहासिक अध्ययन मोटे तौर पर दो श्रेणियों में आते है 'तुलनात्मक इतिहास' और 'तुलनात्मक ऐतिहासिक विश्लेषण'। तुलनात्मक इतिहास का सामान्य रुप से, ढीले तरीके से किसी अध्ययन का उल्लेख करने के लिए प्रयोग किया जाता है, जिसमें राष्ट्र राज्यों, संस्थापक संकुलों, या सभ्यताओं के दो या अधिक ऐतिहासिक प्रक्षेप पथों को एक साथ रखा जाता है। कुछ अध्ययन जो इस शैली में आते हैं, जैसे चार्ल्स, लूई और रिचर्ड टिल्ली की 'द रेबेलियस सेंचुरी 1810-1930, एक विशिष्ट ऐतिहासिक मॉडल की रुपरेखा तैयार करने का प्रयास करते हैं जिन्हें भिन्न राष्ट्रीय संदर्भों के आर-पार लागू किया जा सकता है। अन्य अध्ययन, जैसे राइनहार्ड बेनेडिक्स का 'नेशन बिल्डिंग एंड सिटिज़ेनशिप' और पैरी एंडरसन का 'लिनिएजस ऑफ द ऐब्सल्यूटिस्ट स्टेट', तुलनाओं का प्रयोग, मूलरुप से राष्ट्रों या सभ्यताओं के बीच विषमताओं को उजागर करने के लिए करते हैं जिनकी पृथक समष्टियों के रुप में कल्पना की गई है। स्कोक्पॉल स्वयं द्वितीय पद्धति का अनुमोदन करती है, अर्थात् तुलनात्मक ऐतिहासिक विश्लेषण का मूल उद्देश्य 'राष्ट्र राज्यों जैसी बृहत् इकाइयों के लिए अनिवार्य घटनाओं या संरचनाओं के बारे में कारणात्मक, व्याख्यात्मक परिकल्पना का विकास, परीक्षण और शोधन का प्रयास करना है'। विशिष्ट परिघटना (उदाहरण के लिए क्राँतियाँ) के बारे में कारणात्मक संबंध को विकसित करने और सामान्यीकरणों को प्राप्त करने के लिए, 'राष्ट्रीय ऐतिहासिक प्रक्षेप पथों के चयनित हिस्सों को तुलना की इकाइयों के रुप में' लेकर वह इसे करता है। ऐसे दो विधियाँ हैं जिनके द्वारा जिस परिघटना की व्याख्या करने का प्रयास किया जा रहा है, उसके संभावित कारणों के साथ मान्य संबंध स्थापित किए जा सकते हैं। जॉन स्टअर्ट मिल द्वारा अपनी कृति 'ए सिस्टम ऑफ लॉजिक' में प्रस्तुत की गई ये विधियाँ हैं (क) सहमति की विधि और (ख) अंतर की विधि। सहमति की विधि के अन्तर्गत, अध्ययन के लिए अनेक केस लिए जाते हैं जिनके बीच परिघटना के साथ.साथ परिकल्पना में प्रस्तावित कारणात्मक कारकों का समुच्चय भी साझा होता है। अंतर की विधि, जिसका प्रतिपादन स्कोक्पॉल ने किया था, केस के दो समुच्चय लेती है: (क) सकारात्मक केस, जिनमें परिघटना के साथ परिकल्पनाकृत कारणात्मक संबंध भी उपस्थित है और (ख) नकारात्मक केस, जिनमें परिघटना के साथ-साथ कारण भी अनुपस्थित है परन्तु अन्य प्रकार से ये केस प्रथम समुच्चय के समान हैं। फ्रैंच, रुसी और चीनी क्राँतियों के अपने तुलनात्मक विश्लेषण में, अपनी कृति स्टेट्स एंड सोशल रेवोल्यूशन्स: ए कंपेरेटिव अनैलिसिस ऑफ फ्राँस, एशिया एंड चाइना, स्कोक्पॉल(1979) में स्कोक्पॉलइन तीनों को सफल सामाजिक क्राँति के सकारात्मक केस के रुप में लेती है और दावा

करती है कि ये तीनों अनेक अन्य विषमताओं के बावजूद समरुपी कारणात्मक प्रतिमानों को प्रकट करते हैं। प्रथम केस में कारणात्मक संबंध के बारे में तर्कों को मान्य बनाने के लिए वह नकारात्मक केस के एक सेट को, अर्थात् 1905 की असफल क्राँति, और इंग्लिश, जापानी और जर्मन इतिहासों के चयनित पहलुओं को लेती है। ऐतिहासिक पद्धति के आलोचकों का मानना है कि चूंकि अवरोक्त (बाद-वाली) भारी संख्या में केस का अध्ययन नहीं करती, वह एक सच्चे वैज्ञानिक तरीके से एक निश्चित परिघटना के अध्ययन का अवसर प्रदान नहीं करती। हैरी एक्स्टीन ने, उदाहरण के लिए, तर्क दिया है कि छोटी संख्या के केस पर आधारित सामान्यीकरण 'शब्दकोष के अर्थ में निश्चित रुप से एक सामान्यीकरण होगा'। फिर भी 'कार्यप्रणाली विषयक अर्थ में, सामान्यीकरण' को 'केस की एक बड़ी संख्या को, जो इतनी बडी हो कि सांख्यिकीय विश्लेषण जैसे कुछ निश्चित कठोर परीक्षण प्रक्रियाओं के लिए प्रयोग की जा सके, सम्मिलित करना चाहिए' (हैरी एक्स्टीन, इंटर्नल वॉर, 1964)।

अभ्यास प्रश्न 3

नोट: i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।
ii) इकाई के अन्त में अपने उत्तर के लिए संकेतों को देखें।

1) प्रयोगात्मक पद्धति क्या है? एक तुलनात्मक ढाँचे के अन्तर्गत राजनीतिक परिघटना के अध्ययन के लिए यह पद्धति कहाँ तक उपयुक्त है?

.....

.....

.....

2.5 सारांश

तुलना एक मौलिक मानवीय प्रयास है। जाने या अनजाने हम अपने चारों ओर अनेक वस्तुओं की तुलना करते रहते हैं। राजनीति शास्त्र के विषय में, तुलनात्मक पद्धतियों का प्रयोग करते हुए, न केवल संस्थाओं, प्रणालियों या परिघटनाओं के सामान्य वर्णन या विशेषताओं की व्याख्या की जा सकती है बल्कि राजनीतिक प्रणाली की एक सूक्ष्म भेद-युक्त समझ भी उपलब्ध की जा सकती है-प्रतिमान, समानताएँ और विषमताएँ।

तुलना को राजनीतिक अन्वेषण की एक पद्धति के रुप में प्रयोग करने की प्रक्रिया में, विद्वानों ने अनेक प्रकार की पद्धतियों का प्रयोग किया है जैसे प्रयोगात्मक पद्धति, केस-स्टडी पद्धति, सांख्यिकीय पद्धति, ऐतिहासिक पद्धति इत्यादि। ये पद्धतियाँ वे मौलिक उपकरण और तकनीक हैं जो तुलनावादियों द्वारा आनुभाविक डेटा और परिमाण निर्धारित करने योग्य चरों के माध्यम से राजनीतिक परिघटनाओं के बारे में एक वैज्ञानिक और गहरी व्याख्या की स्थापना के लिए प्रयोग किए जाते हैं। परन्तु, अपने अन्वेषण के लिए उपयुक्त पद्धति की पहचान करना शोधकर्ता (तुलनावादियों)

का काम है। यदि एक अकेली पद्धति पर्याप्त न हो, तो एक व्यापक समझ की प्राप्ति के लिए पद्धतियों के सम्मिश्रण का प्रयोग किया जा सकता है।

2.6 मुख्य शब्द

निर्माण : निर्माण एक भावात्मक अवधारणा है जिसे एक निश्चित परिघटना की व्याख्या के लिए विशेष रुप से बनाया (या चुना) जाता है। निर्माण एक सरल अवधारणा हो सकती है अथवा संबंधित अवधारणाओं के सेट (समुच्चय) का सम्मिश्रण।

कारण-संबंधी (कारणात्मक) व्याख्या: किसी वस्तु को समझने का तरीका, यह मानते हुए कि कुछ तथ्य अन्य तथ्यों के उभरने के कारण बनते हैं, उदाहरण के लिए, अत्यधिक जनसंख्या आवास की समस्या का कारण हो सकती है।

पद्धति : वैज्ञानिक ज्ञान के निर्माण या सिद्धांत प्रस्तुत करने के लिए तकनीकों का एक मानकीकृत और संगठित सेट (समुच्चय)। पद्धतियों को इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है: (क) तुलनात्मक (एक से अधिक केस का करते हुए), (ख) संरुपात्मक (एक एकल केस.स्टडी का प्रयोग करते हुए) और (ग) ऐतिहासिक (समय और अनुक्रम का प्रयोग करते हुए)। पद्धति मुख्यतः 'चिंतन के बारे में चिंतन' है।

मॉडल (प्रतिमान) : प्रणाली की समष्टि या एक हिस्से का प्रतिरुप जिसका निर्माण प्रणाली के अध्ययन के लिए किया जाता है। प्रणाली या परिघटनाओं के प्रतिनिधित्व द्वारा एक मॉडल यथार्थ को सरल बना देता है।

सांप्लिंग (प्रतिचयन) : पर्यवेक्षण और सांख्यिकीय अनुमान के उद्देश्य से, 'सैंपल' (नमूने) के नाम से पुकारे जाने वाले उपसमुच्चय (सबसेट) को चुनने की एक सांख्यिकीय प्रक्रिया है। उदाहरण के लिए, संभावयता/प्रतिबंधों के कारण हम एक देश की समस्त जनसंख्या का अध्ययन नहीं कर सकते। अतः हम जनसंख्या में से प्रतिनिधि नमूनों को पर्यवेक्षण और विश्लेषण के लिए चुनते हैं ताकि उस नमूने से प्राप्त अनुमान को जनसंख्या के लिए सामान्यीकृत किया जा सकता है।

सैद्धांतिक प्रस्ताव : एक कथन (एक सामान्यीकरण के समान जो दो चरों के बीच संबंध की पुष्टि या खंडन करता है। कथन से सामान्य अनुप्रयोग की अपेक्षा की जाती है।

2.7 संदर्भ

दुर्खीम, एमिल. (1984). द डिविज़न ऑफ लेबर इन सोसाइटी, मैक्मिल्लन प्रेस.

हेग, रॉड, मार्टिन हैरप, शॉन ब्रेसलिन. (1993). कंपेरेटिव गवर्नमेंट एंड पॉलिटिक्स, मैक्मिल्लन, लंदन, (तृतीय संस्करण).

मोहन्ती, मनोरंजन. (1975). "कंपेरेटिव पोलिटिकल थ्योरी एंड थर्ड वर्ल्ड सेंसिटिविटि" टीचिंग पॉलिटिक्स, संख्या, 1 और 2.

सारटोरी, जियोवान्नी. (1994). "तुलना, क्यों और कैसे", माटेइ दोगन और अली कज़ानसिगिल (सं), कंपेरिंग नेशन्स, कॉन्सेप्टस, स्टैटजीज़, सबस्टेंस, हलैकवेल, ऑक्सफोर्ड.

स्वॉनसन गय ई. (1971). "फ्रेमवर्क्स फॉर कंपेरेटिव रिसर्च: स्ट्रकचरल ऐंथ्रोपॉलजी एंड द थ्योरी ऑफ ऐक्शन", आइवन वैलियर (सं) कंपेरेटिव मेथड्स इन सोशियोलॉजी, बर्कले.

स्मेलसर, नील जे. (1976). कंपेरेटिव मेथड्स इन द सोशल साइन्सेज, प्रेंटिस हॉल, एंगिलवुड़ क्लिफ्स.

स्कोक्पॉल, थेडा. (1979). स्टेट्स एंड सोशल रेवोल्यूशन्स: ए कंपेरेटिव अनैलिसिस ऑफ फ्राँस, एंशिया एंड चाइना, केंब्रिज प्रेस.

टॉकविल, अलेक्स.डी. (1835). डेमॉक्रेसी इन अमेरिका: खंड 1, (पुनर्मुद्रण 2002), यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस.

टॉकविल, अलेक्स.डी. (1856). द ओल्ड रेजीम एंड द रेवोल्यूशन, हार्पर ब्रदर्स, न्यू यॉर्क.

वुल्फ, एरिक आर. (1982). यूरोप एंड द पीपिल विदाउट हिस्ट्री यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस.

2.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1

1) पद्धति आपेक्षिक सुगमता के साथ किसी कार्य को करने या किसी वस्तु को निष्पादित करने का उपयोगी तौर-तरीका है। तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र में, सामाजिक और राजनीतिक विश्लेषण के लिए विद्वानों ने अनेक प्रकार की पद्धतियों का प्रयोग किया है। पद्धतियों का प्रयोग, राजनीतिक प्रक्रिया, प्रणालियों या परिघटनओं के अध्ययन/अनुसंधान के दौरान परिकल्पनाओं को उत्पन्न करने, संकल्पनात्मक नवाचार और सिद्धांत सूत्रीकरण के लिए किया जाता है।

अभ्यास प्रश्न 2

1) तुलना के साथ अध्ययन सामाजिक-वैज्ञानिक अनुसंधान में विशाल महत्व प्रदान करता है। तुलनावादियों ने हमेशा दावा किया है कि समाज शास्त्रों में तुलनाओं के माध्यम से वैज्ञानिक अनुसंधान उपार्जित किया जा सकता है। तुलनात्मक राजनीति के विषय में तुलनावादी केवल तुलना नहीं करते बल्कि राजनीतिक जीवन के बारे में परिशुद्ध और यथासंभव जानकारी प्राप्त करने के लिए तुलना करते हैं-राजनीतिक संस्थाओं, प्रणालियों या परिघटनाओं के प्रतिमानों, उनके बीच और उनके मध्य में समानताओं और विषमताओं का।

अभ्यास प्रश्न 3

1) तुलनात्मक राजनीति में प्रयोगात्मक पद्धति का प्रयोग दो समतुल्य स्थितियों के बीच कारण-संबंधी या कारणात्मक संबंधों को स्थापित करने के लिए किया जाता है। प्रयोगात्मक पद्धति शोधकर्ता को उन निश्चित स्थितियों या रीति को स्थापित करने में सक्षम बनाती है जिसके अन्तर्गत एक के द्वारा दूसरी उत्पन्न होती है, अथवा दूसरी को प्रभावित करती है। प्रयोगात्मक पद्धति का एक महत्वपूर्ण पहलू ये है कि वैज्ञानिक अन्वेषण के लिए यह लगभग सर्वाधिक आदर्श पद्धत्ति लें।